हमारि

चिट्ठी

गढ़वाली साहित्य, समाज अर सृजन को दस्तावेज

अंक :2 वर्ष :2 अक्टूबर–दिसम्बर 2007, सहयोग :20 रु0

लोक–कथा विशेषांक

सम्पादन
रानू बिष्ट

संयोजन–सहयोग
भीष्म कुकरेती

सम्पादन–सहयोग
आशीष *सुन्दरियाल*

संचालन–सहयोग
मदन मोहन डुकलाण

आवरण
राजीव रावत

आवरण फोटो
डॉ. सुनील कैन्थोला

सम्पर्क सूत्रा

देवेन्द्र प्रसाद जोशी
छैल, 76– विद्याविहार
पो.–बंजारावाला देहरादून
फोन – 9259060908

गिरीश सुन्दरियाल
चुरेडगौं (चौंदकोट),
पो.–जगस्याखाल (नौगांवखाल)
पौड़ी गढ़वाल – 246162
फोन – 9411783077

भीष्म कुकरेती
गढ़वाल दर्शन, नटवर रोड़ न. 1
जोगेश्वरी (पूर्व), मुम्बई
फोन – 09323973711

प्रचार–प्रसार
रमेन्द्र कोटनाला
कुलानन्द घनशाला

मौ–मदद
रोशन धस्माना
पं. उदय शंकर भट्ट

Lokeh] idk'kd jkuh fc"V }kjk
,&16] j{kkije ¼ykMiqj½ ikLV jk;iqj ngjknwu&248008] Qksu& 2788748 cVh idkf'kr vj
o [kq.kh ^le;&lk{;*] 15 Qkyrw ykbu ngjknwu cVh eqfnzrA

ई-मेल : chithee@rediffmail.com, **वेबसाईट :** www.angwal.org

lnL;rk

lkykuk	100@& #I;k
vkthou	1000@& #I;k
lLFkkxr	2000@& #I;k

सम्पादन–संचालन पूरी तरह अवैतनिक अर अव्यवसायिक

लोक साहित्य मर्मज्ञ

डॉ0 गोविन्द चातक (.....)

तैं सादर

समर्पित

ये अंक मा ...

लेख

गढ़वाली लोक साहित्य अर वेको अध्ययन / भ.प्र. नौटियाल 7

गढ़वाळि लोक कथा परैं एक नजर / डॉ. न.कि. ढौंडियाल 13

अंतर्राष्ट्रीय लोक कथा वर्गीकरण ... / हिमांशु शर्मा 21

गढ़वाळि लोक कथौं वर्गीकरण / अबोध बन्धु बहुगुणा 23

गढ़वाळि लोक-कथाओं को संकलन / रोहित गंगासलाणी 28

लोक कथौं का सार्वभौमिक तत्व-गुण अर.... / उमा शर्मा 34

गढ़वाली कथौं मा प्रबंध शास्त्र की सूचना / भीष्म कुकरेती 36

जानवरुं संबन्धित लोक कथौं संकलन.... / भीष्म कुकरेती 43

लोक कथाओं को सामाजिक विन्यास पर प्रभाव / डॉ. राकेश गैरोला 45

गढ़वाली लोक कथाएं : जौनपुर का परिप्रेक्ष्य मा / सुरेन्द्र पुण्डीर 47

लोक कथा

काफळ पाको मिन नि चाखो 50

फ्यूंळि 52

महासू अर हूणा भाट 56

बीरा बैण अर पंचभैय्या 59

माधु धुमा-भड़ 64

फुर फतैं मेरि कुंडळि कथैं 70

सूनी गरूड़ 72

गैथे डाळी 75

जरूरी छ लोक-साहित्य को सज-समाल

गढ़वाली लोक साहित्य की परम्परा मा लोक–कथाओं को अपणो एक खास महत्व छ। पुरण जमना मा जब शिक्षा हो या मनोरंजन–कै भि चीज का आज जना साधन नि छया त हमारि ये लोक–कथाएं ही मनोरंजन का दगड़ै–दगड़ नैतिकता अर मूल्यपरक शिक्षा को माध्यम हूंदी छयी। साख्यूं बटे अर्जित ज्ञान विरासत का रूप मा एक पीढ़ी बटे हैंकी पीढ़ी तैं मिल्दो छयो जैमा लोक–कथा, लोक–वार्ता अर लोकगीत आदि को खास योगदान रैंदो छयो।

लोक–कथाओं को गढ़वाळि समाज से भौत ग्हैरो सम्बन्ध छ। लग. भग हरेक खाळ–धार, गौं–गौळा, गाड़–गदना, ढुंगा–माटा, डाळा–बोटा पर क्वी न क्वी कथा जरूर छ। इन्नी यख थौळ–मेला, रीत–रिवाज, खान–पान आदि पर भि कतनै कथा सुणण खुणै मिलदन जो सब यखै परम्पराओं, मान्यताओं, आस्थाओं अर विश्वासों तै बल प्रदान कर दिन। अंचल विशेष से जुड्यां हूण का बावजूद भि लोक–कथाओं की विषय वस्तु काफी व्यापक रैंद। सार्वभौमिक कथानक तै स्थानीय बिम्बों अर पात्रों का माध्यम से प्रस्तुत कर्ने कला ही यूं लोक–कथाओं तैं व्यापक बणौंद। ये लोक कथाएं मनोरंजक त हूंदी छन दगड़ मा शिक्षाप्रद भि रांदिन। आंचलिकता को पुट ल्हेकि व्यापक विषय तैं सरल रूप मा पेश कर्नो ही लोक–कथाओं की खासियत छ।

लोक–कथाएं हमारा लोक साहित्य की अनमोल धरोहर छन, ये परम्पराओं को प्रत्यक्ष प्रमाण छन, ये इत्यास की साक्षी छन, ये साहित्य को सार छन, ये संस्कृति की समृद्धता की सबूत छन या इन ब्वले जावा कि ये लोक कथाएं हमारा समाज की साहित्यिक, सामाजिक अर सांस्कृतिक संचेतना का दगड़ पारम्परिक, पौराणिक अर ऐतिहासिक आभा की प्रतीक छन त क्वी बड़ी बात नि होली।

पर बगत का दगड़ अर आधुनिकता का दौर मा हमारि सांस्कृतिक विरासत की अनमोल अंग–हमारि ये लोक–कथाएं धीरे–धीरे हर्चदा जाणी छन अर आज यूंका संकलन अर संरक्षण की प्रबल आवश्यकता छ।

गढ़वाली लोक साहित्य अर वेको अध्ययन

◆ भगवती प्रसाद नौटियाल

कै बि राज्य, क्षेत्र व कैं खास जगा का लोक साहित्य पर कलम उठौण से पैलि वेकि भौगोलिक संरचना, सामाजिक ढांचु अर इतिहास जाणनु समझणु भौत जरूरी होंद। ये आधार पर जब हम गढ़वाळा भूगोल पर नजर दौंड़ौदां त सबसे पैलि वेकि सीमाओं तैं जाणनै उत्सुकता होंद। पौराणिक ग्रन्थों, विशेष कै कि स्कन्द पुराण का मुताबिक विशाल हिमालय पांच खण्डों मा बंट्यू च–

''खण्डा पंच हिमालयस्य कथिता नेपाल–कूर्मांचलौ।
केदारोऽथ जलंधरोऽथ रूचिरः कश्मीर संज्ञाऽन्तिमः।।

ये कथन का मुताबिक, वर्तमान गढ़वाळ संभाग को नौं केदार–खण्ड छयो, जैकि सीमाओं मा उत्तर मा श्वेतांत पर्वत (गढ़वाळ–हिमालये गगन चुम्बी चुळंखि) पूरब मा बौद्धांचल (वर्तमान बधाण परगना), दक्षिण मा भावरी मैदान अर गंगाद्वार (हरिद्वार) अर पश्चिम मा तमसा नदी (वर्तमान टौंस नदी) सम्मिलित छै।

गढ़वाळो प्राकृतिक वातावरण वे तैं संगीतमय बणौद। यखै हरीं–भरीं डांडी–कांठी बुग्याळी धरती, हिमाच्छादित चुळंखि अर गंगाओं, नयारों व गाड–गदिन्यों की भरमार, अस्मानि चुल्ख्यो का ऐंच सुन्दर –सुन्दर तलौं, फुल्लु कि घाटी, बुरांसा फुल्लु कि सिंदूरी आभा, पुंगड़्यों की भीट्यां मा फ्यूंली पिगंलैस अर बसग्याळि कुयेडि, एक इनो नैसर्गिक रौंत्याळु वातावरण बणौंदन जै से उद्वेलित व्हेकि नर–नारी नाच–गै कि अपणा श्रम–साध्य जीवन का कष्टों तैं भुलणै कोशिश कर्दन। इना मयाल्दु, खुदेड़ अर बिगरैल्या वातावरण मां नारी मनै कोमल भावना एकान्त का क्षणो मां कबि घास–लखडु काट्द, कबि जान्दरि रिटौंद, गीत बणी तैं भैर औंदन अर यीऽ वु गीत–वार्ता छन जु कै भी क्षेत्र का लोक साहित्य का प्राण होंदन। ये ही कारण से बोलेंद कि लोक काव्य का रूप मां गढ़वाल कत्ति स्वरों मा गित्तु कि भौंण पुण्द। यखा जागर, पंवाडा, बाजूबंद, खुदेड़ गीत, चैत्वाळि

आदि लिखित साहित्य भक्ति, वीर, श्रृंगार अर करुण रसै परम्पराओं तैं भी मात दे देदंन। बाजूबंद छोपती अर लामण अगर उदात्त श्रृंगार का मनोहारी संवाद गीत छन त झुमैलो अर चौफला प्रकृति तैं मुखरित कन्न वाळा गीत अर जागर देवी द्यवतों की अर्चना का गीत व पंवाड़ा भड़ों की याद का गीत छन।

जन कि सब्बि जाण्दन, गढ़वाळ देवी–देवतों, ऋषि–मुनियों, साधु–सन्यासियों एवं चिंताको व साधकों की रंगभूमि अर कर्मभूमि रै, यींऽ कारण च कि यखा लोक साहित्य पर भक्ति सम्प्रदाय व साधकों का तंत्र–मंत्र, उखेल आदि को प्रभाव जागर गीतों मा कत्ति प्रकार का सन्दर्भों मा मिल्द। नाथ सम्प्रदाय वाळों न त यखा लोक जीवन तै कत्ति किस्म से प्रभावित करे जन कि कृष्णावती का जागर मा द्यखण मा औंद–

तौन उर्द्वमुखी नाद बजैन मेरी नारैणी
गज्ज गज्ज भर जटा तौंकि, बेथ भर नंग
गेरू रंग डालि जोग्योंन मेरी सपेद कपड़्यों
डब्ल्यों का गौणा मेरी भांग मा फूंके नारैणी। आदि

यूं सिद्व–बैरागियों आर नाथ सम्प्रदाय वाळों का करण गढ़वाली पद्यात्मक लोक साहित्य ही प्रभावित नि ह्वे बल्कि गद्य साहित्य भी प्रभावित ह्वे जन

कि चामो कुवा लौनौ लौण चमारि के कुंड में गई
(सत्यपाथ मन्दिर देवलगढ़ के बुद्धनाथ की पोथी से)
बिन बादल वैयागढ़ को सल्लामा पौंछे।
बैणी बिसल्या को सल्लाम पौछे।। ('घुंयाळ'से)
यस पिण्ड को बाण कौन मारे–मेरा मैमंदाबीर औरासिणो बाणमार।
बोरासिणो बाण मार, राच्छसी बाण मार, बोकसणी बाण मार।।

गढ़वाळा गढ़पतियों आदि का कारण, एक तिरपां त यख

सत्ता का वास्ता लड़ै–झगड़ा होणा रौंदा छया त हैंकि तिरपां हमारा आशु कवि बादि्द व बाजगी आदि भड़ों की वार्ताओं का पंवाड़ा भी गाणा रौंदा छया साथ ही यखा लोक साहित्य मा सामंतीय युग का पतनोन्मुखी गीतों को भी अपणो एक इतिहास च। यूं गित्तू मां जीतू बगड़्वाळ, फ्यूंली रौतली, सरू कुमैण, छमना पातर अर थोकदारि युग मां छुमाबौ, गयेळि अर मधुलि जना गीत भौत प्रसिद्ध ह्वेन। ये वास्ता बोले सकेंद कि जैं परकार से गढ़वाळो बिगरैलु नैसर्गिक वातावरण दिखेंद, वे ही परकार से यखो लोक साहित्य भी कत्ति किस्मै विविध ाता को पर्चो देंद।

मोटाळा तौर पर ये लोक साहित्य का वर्गीकरण मा ज्व पद्धति अपणये जांद वे आधार पर ये तैं तीन वर्गों मां बांटे सकेंद

- पद्यात्मक/गीतात्मक लोक साहित्य,
- गद्य–पद्यात्मक (चम्पू).
- गद्यात्मक लोक साहित्य।

कबि कबि ये मोटाळा वर्गीकरण मा कुछ फेर –बदल भी कन्ना पड़द। जनकि गढ़वाळि लोक साहित्य मा अन्तष्टि संस्कार पर क्वी गीत न मिल्द पर खोज कन्न बाद मालूम ह्वे कि भोट्यों अर माछ्र्यों कि संस्कृति मां ढुरिंग व अम्हरम, अन्तिम संस्कार सम्बन्धी महत्वपूर्ण गीत छन। दूसरां जैं उचै पर खेती बाड़ी को क्वी साधन नी हमारा पशुचारक जु अपणा बाखरों/भेड़ो तै लेकि ग्रीष्म ऋतु का 4–5 मैनो तक बुग्यालों/पयाळों मां चल जांदन अर जु लोग तिब्बत दगड़ि व्यापारा सिलसिला मा डांडा पोर चल जांदन, वूंका लोक साहित्य मां अधिकांश गीत पशुपालन व व्यापार सम्बन्धी अर अधिकांश कथा साहित्य भूत–खबेस व पशु–पक्षियों तक ही सीमित च।

ये वर्गीकरण को विवेचन ये प्रकार से करे सकेंद–

पद्यात्मक - ये वर्गीकरण मां धार्मिक गीत, संस्कार गीत, ऋतु गीत, कृषि गीत, खौळा–मेलों का गीत, उत्सव एवं पर्व सम्बन्धी गीत, देवी–द्येवतों का गीत व जागर, खुदेड़ व विरहजनित गीत, और लघु गीत जनकि अन्सी को गीत–अन्सी तेरा द्यूर कत्ति–एक बिसी नौ,

अन्सी तु खांदि क्या छैं– एक मुठी जौ, अन्सी तेरा भितर क्या च–एक फुट्यूं तौ–आदि एवं औजियों/बादि्दयों का ऋतुगीत, औंदन।

गद्य-पद्यात्मक - ये वर्गीकरण मां प्रेम प्रधान व शौर्य गाथा/गीत ही मुख्यतः वर्णित छन जन कि रजूला–मालूसाही को गीत,जीतू बगड्वाळ को गीत, भडों की वार्ता, रणभूतों की वार्ता, तीलू रौतेली, जगदेव पंवार, रणूरौत, गढू सुम्याळ, रिखौळा लोधी अर माधोसिहं भण्डारी आदि की शौर्य गाथा औंदन।

गद्यात्मक- ये वर्गीकरण मा लोक कथा, आणा–पखाणा, पहेलियां पशुपक्षियों की कथा, भूत–खबेस कि कथा आदि औंदन। अब्बि तलक गढ़वाळा लोक साहित्य का अध्ययन, शोध व प्रकाशन पर जथगा भी काम ह्वे वु उत्साह वर्धक त छैः च पर आधा अधूरा ही च। किलै कि यु काम विद्वानुन अपणी व्यक्तिगत हैसियत से करे। कैं संस्था अथवा विश्वविद्यालय आदि का द्वारा अब्बि तलक ये साहित्यै खोज का वास्ता क्वी मदद कम से कम म्यारा द्यखण मा नि ऐ। आवश्यकता च गहन अध्ययन अर विस्तृत खोजै जु कै व्यक्ति विशेष का द्वारा सम्भव नी, किलै कि यु साहित्य त गढ़वाळा ओणा–कोणों मा खुजौण पड़लो अर गढ़वाळ क्वी छोट्टि–मोट्टि जगा नी जख कि मनखि एक द्वी मैना मा घूम–घामी अपणो शोधपूर्ण काम पूरो कर द्यो।

गढ़वाळ त अपणी भौगोलिक सीमाओं का अनुसार रवांई–जौनपुर (अब जौनसार बावर बि) बटी लेकि बधाण परगना तक अर हिंवाळी–कांठ्यों बटी हरिद्वार तक फैल्यूं च त एक मनखिन कख कख जि जाणं कहावत भी च– "कख रैगि नीति, कख रैगि माणा– श्याम सिंह पट्वारिन कहां–कहां जाणा"।

स्थानीय लोक साहित्यै सामग्री सभी दूर–दराजा गौं शहर, कस्बों व मन्दिरों/मठों मा फैली होण का करण, यीं सामग्री का गहन अध्ययन व एकत्रीकरण मा भी काफी दिक्कत सामणा अली व समय भी भौत लगलो। पहाड़ी क्षेत्र होण का कारण मार्गों की दुर्गमता भी सामणा औंद, अनेक प्रकारै विविधता का कारण लोक साहित्य को संग्रह एक व्यवस्थित योजना का भितर ही सम्भव च।

संकलन कन्ना वास्ता सर्वप्रथम समस्त गढ़वाल तै कत्ति भागों मा बांटण होलो। यांका बाद एक संकलन पत्र तयार कन्नो आवश्यक च। ये संकलन पत्र को प्रारूप तरौं होण चैंद–

- तिथि (संग्रह कब करेगि)
- ग्राम/पट्टी/क्षेत्र एवं जनपदौ नौं
- अभिसूचक को नौं, पता, व्यवसाय, योग्यता आदि।
- संकलन – 1. गीत अर वेका परकार जनकि धार्मिक, संस्कार, ऋतु गीत आदि। 2. जागर/पंवाडा अर वूंका परकार 3. कथा/कहानी अर वूंका परकार–जनकि छोटि, बड़ी ऐतिहासिक धार्मिक पशुपक्षियों की कथा, भूत–खबेसु कि कथा आदि। 4. खेल कूद सम्बन्धी जनकि गिल्ली डंडा, कांचाटीक। 5. आणा–पखाणा/पहेलियां आदि 6. खेती बाड़ी व खाण पकाण का उपकरण जनकि फुल्टी थगुली, गागर, बंठा, भड्डू हळसुंगो/नाड़ो/कंदेला/कूड़/निसुड़ो/कुटळो/दाथुड़ो/थमळो आदि। 7. स्थानीय लोक गायकों (औजी, बादि/हुड्किया) का नौं अर पता। 8. गढ़वाळ का लोक वाद्य आदि।

संग्रह कन्न वाळा तैं यीं बातो खास ध्यान रखण पड़लो कि स्थानीय शब्द जन का तन ही लिखे जावन चा वु गीत का शब्द होन य लोककथा आदि का। संग्रहकर्त्ता यदि वयस्क एवं 50–55 वर्षों मनखि हो त वेका द्वारा कठ्ठा करीं सूचना जादा प्रमाणिक होलि वनिस्पति कै स्कुलि नौन्याळा।

ऐंच लेखीं विधि से लोक साहित्य को अध्ययन/संकलन/खोज कै भी एक विद्वान अथवा छोटि–मोटि संस्था का बसै बात नी। किलै कि ये काम का वास्ता काफी धन की व्यवस्था कन्न पड़ली ताकि न त मानदेय आदि मा कोताही बरते जाव अर ना ही आवश्यक उपकरण जन कि कैमरा, टेप रिकॉर्डर, मार्ग व्यय, कम्प्यूटर आदि की खरीद मा कोताही बरते जाव। यदि सम्पूर्ण विधि विधान से यु काम करे जाव त ये कि पूर्ति पर कम से कम 3–4 साल लग जला।

अतः यदि गढ़वाळो विद्वत वर्ग अपणा लोक साहित्यो मौलिक और गहन अध्ययन को पक्षधर छ त वे तैं उत्तराखण्ड राज्य का शिक्षा एवं सांस्कृतिक मंत्री व गढ़वाल विश्वविद्यालय का कुलपति पर ये शाधपूर्ण कार्य का वास्ता एक लोक साहित्य शोधन विभाग का गठन का वास्ता दबाव बणौण पड़लो। अर ये विभाग को विभागाध्यक्ष एक इना सर्वमान्य विद्वान तैं बणये जाव जु न केवल गढवळि भाषा अर भाषा विज्ञान को ज्ञाता हो बल्कि गढ़वाळै वीं संस्कृतिक थाती से परिचित हो ज्व वखै जीवन दायिनी संस्कृति च साथ ही वे तैं घट्टै भेरण अर हौळ का सुहौळ अर डामर आदि की भी समझ हो, मीन अर शकरगंधी मा भेद कर सको, घड्याळी कन लग्द/पंडो कन नाचदन/रण भूतों को बाजों कन लग्द, को भी ज्ञान हो, स्थानीय टोणा–टुटमुणों, रौखाळि, सैद्वाळि आदि से भी परिचित हो आदि आदि।

❐❐❐

गढ़वाळि लोक कथा परैं एक नजर

◆ डॉ. नन्द किशोर ढौंडियाल 'अरूण'

'कथा' शब्द कथन या 'कहा' शब्द से बण्यूं च, जैक अर्थ च ब्वलणू कथा ब्वलै जांद अर सुणदरा सुणदा छन, भारतीय समाज मा कथा ब्वलणा अर सुणणा की परम्परा काफी पुराणी च। वेद से ल्हेकि पुराणु अर पुराणु से ल्हेकि महाकाव्यों तक की सारी विषय सामग्री यूं कथौं मा ही समेटी च। महर्षि व्यास संसार का सबसे बड़ा कथ.ाकार छया, यूं न अपणा वेद शास्त्रू मा जतगा कथा लिखिन वो सारी की सारी कथा आज भी ज्यूंदी छन। पुराणा समय मा कथा पढ़णौं लिखणौ अर सुणणा की एक लम्बी परम्परा छयी पर क्या? ये वेद शास्त्रू की पोथ्यूं मा संकलित कथा व्यास जी की ही लिखीं या रचीं छन जब ये प्रश्न कू उत्तर पाठकू अर आज पढ्यां–लिख्यां मनिख्यूं तैं पूछे जांद त वूंकू उत्तर साफ नि हूंदू। कुछ ब्वलदन कि ये सभी कथा वथा व्यास जी की लिखीं अर रचीं छन, कुछ पढ़यां–लिख्यां मनखि यीं बात से सहमत नि हूंदा। वूंको तर्क च कि अगर ये सारी कथा व्यास जी की लिखीं छन ता महाभारत जनो ग्रन्थ जैमा कि वक्त–वक्त पर कै श्लोक मिलए गिन, वेकू पुरणू स्वरूप कुछ और ही छया, और नया कथाकारों ला महाभारत मा जो कुछ भी जोड़ी या वूंकी रचना छयी फिर इनमा हम कनकै बोली सकदां कि महाभ.ारत का अलावा औरि जतगा भी पोथी छन, वो सब व्यास जी की लिखीं छन। विद्वानों को तर्क कुछ भी हो, पर या बात त सच्ची च कि हमारा जतगा भी पुराणा ग्रन्थ छन वूं को सम्पादन महर्षि व्यास ना करी अर ये सम्पादन करदा वक्त वूंना तात्कालीन भारत का लोक जीवनसे संदर्भित जतगा भी लोक कथा छयी वूं तैं यू ग्रन्थ मा स्थान दिने जो बाद मा हमारा शास्त्रू की कथा बण गिन।

कथा साहित्य कविता साहित्य से ज्यादा लोकप्रिय हूंद जैंते कि साधारण से साधारण बुद्धि का मनखि से ले कै विद्वान से विद्वान मनखि उन्नी समझ सकद जनकि वो सुणै जांद। गढ़वाऴ मा आज जो भी

लोक साहित्य चा वेमा गढ़वळि़ लोक कथा सबसे ज्यादा मनोरंजन अर लोकप्रिय साहित्यिक विधा च, गढ़वाळ की धरती मा या लोक कथा कख बटि आया अर ये समाज पर येको क्या प्रभाव पड़ी यां का विषय मा हम तैं यखमा थ्वड़ा विचार करण पड़लौ जनकि गढ़वळि लोक कथौं तै सुणण अर पढ्ण से ज्ञात होंद कि एक समय मा यख का लोग भौत पढ़्यां–लिख्यां छया, जौना कि वेद, पुराण, रामायण, महाभारत, कथा सरिसागर, पंचतंत्र, सिंगासन बत्तीसी, जना ग्रन्थ को पठन–पाठन करे, बाद मा जब ये यूं सभी पोथ्यूं की कहानी अपणा नौन्याळ तैं सुणादा छया ता यूंकी अनपढ़ अर निरक्षर घरवळि भी यूं कहानी तैं याद करि दैं दी छयी, एक तरफैं जख विद्वान लोग शास्त्रू का द्वारा समाज तैं कहानी कथौं की या भेंट दींदा छया, वख अनपढ अर निरक्षर पर जागरूक जनानी अपणा अनपढ़ समाज मा यूं कथौं तैं स्थानीय बोली भाषा मा बिंगाड़ी छयी वे समैमा कहानी कला वो यों विस्तार गढ़वाळ मात्र गढ़वाळ मा ही ना बल्कि देश और विदेश का क्षेत्र मा हूणू छयो। कुछ समय का बाद जब कतनै ऐतिहासिक कारणू से यख शिक्षा लोप ह्वे गै तब लोक–जीवन मा पैली बटि ज्यूंदी या कहानी कला समाज तै शिक्षित अर दिक्षित कनी रैं। तब यूं कान्यूं अर कथौं तै पंडित न बल्कि खेत खल्याण, गौचरू, बुग्याळू अर बणू मा किसाण, ग्वैर जात्री अर ढांकरी अपणा आपस मा सुणादा छया, यूं तैं तब दाना सयाणा भी सुणणा छया ता छ्वटा नौन्याळ भी अपणी दादि अर नन्नि से सुणणा की जिद्द करदा छया या कहानी इतगा रसीली अर चटपटी हूंदिन कि यूं से सुणदरा अर ब्वलदरा न सुणणा मा थकदा छन न ब्वलणमा। गढ़वाळ मा ये कहानी कतगा बानि की छन अर यूं को स्त्रोत को ग्रन्थ को च, ये का विषय मा हम यख मा विस्तृत चर्चा करणू गढ़वाळि लोककथा का सम्मान अर अपणू धर्म समझदौं।

लोक साहित्य का विद्वानों ल लोककथों का कतनै वर्गीकरण करिन जों मा सबसे पुराणू विभाजन संस्कृत साहित्य का विद्वान ला करि, प्राचीन वर्गीकरण का आधार पर कथा द्वी प्रकार की हुंदिन पैली

कल्पित, जन कि बाणभट्ट की दुसरि इतिहास सम्वत् कथा जन की बाणभट्ट की हर्षचरित्र। पुराणा विद्वानों को यो विभाजन संस्कृत साहित्य की कथा पर आधारित च, जै तैं बाद मा आनन्द व धर्माचार्य अर हरि भद्राचार्य ला नया रूप मा प्रस्तुत करी बाद मा हिन्दी का कथाचार्यों मा डॉ० कृष्णदेव उपाध्याय अर डॉ० सत्येन्द्र ला भी लोककथाओं को अपणी तरौं से विभाजन करी। डॉ० कृष्णदेव उपाध्याय ला लोक कथा छः भागू मा बांटि। जो ये प्रकार से छन :–

- उपदेश कथा
- व्रत कथा
- प्रेम कथा
- मनोरंजन कथा
- सामाजिक कथा
- पौराणिक कथा

डॉ० सत्येन्द्र ला लोक कथाओं तैं आठ भागू मा विभाजित करी। जो ये तरौं छन :–

- गाथाएं
- पशुपक्षी सम्बन्धी अथवा पंचतंत्रीय कथा
- परी कथा
- विक्रम कथा
- बुझौबल कथा
- निरीक्षण गर्वित कथा
- साधु–पीरों की कथा
- कारण निर्देशक कथाएं।

गढ़वाली लोक साहित्य भी लोक–कथाओं को भण्डार च। ये मा कई किस्सा छन जो कुछ ता पुराणी कुछ इतिहास से सम्बन्धित अर कुछ स्थानीय लोगू की कथोल कल्पना का आधार पर बणीं छन। ये कारण यूं सभी कान्यूं अर कथा तैं अपणा ढंग से द्यखण वला गढ़वळि विद्वान ला भी यूं गढ़वळि लोक–कथाओं को एक संकलन

श्री अबोध बन्धु बहुगुणा जी द्वारा "लंगड़ी बकरी" का नाम से सन् 1961 मा प्रकाश मा ऐ, जैमा गढ़वाळ की 19 लोककथा संकलित (संग्रहित) छना येका विद्वान भूमिका लेखक न गढ़वाळि लोककथों तैं आठ भागू मा विभाजित करी, यीं निम्नवत छन :–

- ऐतिहासिक लोक कथाएं
- मानव के जीवन के कृत्रिम विकास सम्बन्धी लोककथाएं
- धार्मिक लोककथाएं
- हास्य सम्बन्धी लोककथाएं
- पूर्तीकामत्य लोककथाएं
- कहावती कथाएं
- बाल मनोविनोदात्मक लोक कथाएं
- संस्मरणात्मक लोक कथाएं

"लगंडी बकरी" की भूमिका मा हुयूं गढ़वाळि कथा को यो विभ. ाजन एकदम मौलिक विभाजन च, परन्तु यीं कृति का प्रकाशन का बाद सन 1964 मा श्री मोहनलाल बाबुलकर ला जो अपणी गढ़वाली लोकसाहित्य से सम्बन्धित एक शास्त्रीय पुस्तक का लेखन प्रकाशन करी वीं शास्त्रीय पुस्तक को नौ च "गढ़वाली लोक साहित्य का विवेचनात्मक अध्ययन" यीं पुस्तक मा विद्वान लेखक ला गढ़वाली लोककथों को जो विभाजन करी वह बहूत महत्त्वपूर्ण अर अनुकरण ीय च यो निम्नवत च–

- देव गाथाएं
- कथा
- व्रतकथाएं
- उपदेशात्मक कथाएं
- मनोरंजनात्मक कथा
- भूत की कथा
- समस्या प्रधान कथा

देव गाथाएं : गढ़वाळ की देव गाथाओं का अन्दर आण वळि अधि

ाकतर कथा मा भारत से सम्बन्धी कथा छन। यूं मा प्रमुख कथा 'गाथा' छन कृष्ण का जीवन सम्बन्धी कथा, कृष्ण रूकमणी गाथा, चन्द्रविली हरण गाथा, नार्गजा कथा, निरंकार कथा, नकुल, सहदेव, भीम कथा, पाण्डव कथा, अर्जुनकथा, नाग लोक विजय कथा, गरूड़ासन कथा, शिव पार्वती कथा शिव को कोढी रूप, नवदुर्गा आदि कथा। गढ़वाळ की ये सभी लोक कथा वास्तव मा संस्कृत साहित्य बटि गढ़वाळि लोक साहित्य मा ऐ।

कथा : गढ़वाळ की धरती धर्म–प्रधान धरती छ, ये ही कारण यीं धरती खुणै देवभूमि ब्वले जांद, यख का लोग समय–समय पर कई प्रकार की धार्मिक कथों का आयोजन करदिन, जों मा श्रीमद्भागवत कथा, सत्यानारायण कथा, एकादशी कथा अर रामायण कथा मुख्य छन। सप्ताह कथा मा यख का कथावाचक सात दिन तक कथा सुणादिन जैंमा पुराणू की कथा का साथ साथ कई क्षेत्रीय कथा भी सुणैये जांदिन। या कथा एक सामूहिक कथा हूंद, सत्यानारायण की कथा भी धार्मिक कथा च जैमा कई कथा सम्मिलित छन। रामायण या रामलीला एक नाट्य कथा च जैते यख क सामान्य जन नाटक का माध्यम से समझदन।

व्रत कथा : व्रतकथा विशेषकर त यख की जनान्यूं की सम्पत्ति छन, यख भी जनानी समय–समय पर जों व्रत तैं लिदिन, वूं व्रत की अपणी–अपणी कथा छन, पूर्णमासी व्रत कथा, चतुदर्शी व्रत कथा, शिवरात्रि व्रत कथा, संकट चौथव्रत कथा, वैकुण्ठ चतुदर्शी व्रत कथा, भैय्यादूज व्रत कथा, निर्जला एकादशी व्रत कथा, सोमवार व्रत कथा, मंगलवार व्रत कथा, बृहस्पतिवार व्रत कथा, शुक्रवार व्रत कथा, शनिवार व्रत कथा, एतवार व्रत कथा आदि व्रत कथा यूं कथों का अन्तर्गत आंदिन। ये कथा मूलतः संस्कृत अर हिन्दी भी कथा छन, जौ तैं यख को जनमानस गढ़वळि भाषा मा सुणद। ये भी एक तरह की लोक कथा छन, जो कि यख की जनानी सुणदी अर सुणोदिन। ये व्रत कथा मनौती अर मनोकामना पर आधारित कथा हुंदिन।

उपदेशात्मक कथाएं : उपदेशात्मक लोककथा का अन्तर्गत यख

का पक्ष्यूं की कथा जानवरों की कथा अर ज्ञान की कथा अंदिन। पक्ष्यूं की कथों मा इन पक्ष्यूं की कथा सम्मिलित छन जो पैली त मनखि छया पर अपणा पाप अर पुण्य का कारण दूसरा जन्म मा पक्षी बणी गिन, यूं मा च्योळी, घुघुती, घिडूंड़ी, कौवा, टिटहरी, करैं कठफोड़, तितरू, मल्यों आदि की कथा मुख्य छन जानबरुं की कथौं मा स्याल, बाघ, बखरी, रिख, हाथी, चूहा, खरगोश, गौड़ी–बळ्द, भैंसी, घ्वाड़ा, हिरण आदि जानवरों की कथौं की एक लम्बी परम्परा च जोकि अनेक ज्ञानवर्धक अर जीवन मा कुछ करणा कू उपदेश दिंदिन। उपदेशात्मक कथौं को मूल उद्देश्य ता रस्ता भटग्यां मनखि तैं रस्ता मा लगणा की कथा छन, ये कथा कुछ ता संस्कृत का हितोपदेश सिंहासन बत्तीसी अर बृहत्कथा जनी पोथ्यूं बटि निकलीं कथा छन, ये कथा कुछ ता कुछ इन भी कथा छन जो कू सम्बन्ध स्थानीय घटनाओं से भी च, अब त अलिफ लैला, तोता–मैना, की कथा भी गढ़वाली लोक कथों का बीच जैकी गढ़वळि मा रंग गिन।

मनोरंजनात्मक कथा : गढ़वाळ की मनोरंजनात्मक कथौं मा रंग–ढंग, सूना भैण, अकबर–वीरबल, चोर–सिपाही, मूर्ख अर विद्वान जनी कथा आंदिन। टोखण्या छोरा जनी कथा मनोरंजनात्मक कथा च जैमा कि निर्बल मा बल की बात करै ग्याई, 'गुद्दू गड्डा' कथा को नायक वीर बालक ता जंगली जानवरों से बचि कैकी, अपणा घर बार वे तैं दींद। स्याल को कूडों कथा भी मनोरंजक कथा छन। यूं कथौं तैं अधिकतर बच्चा सुणादिन और सुणदिन। राजा–राणी और राक्षस की कथा सुणै कि जख बच्चा एक दूसरा तैं उरांदा छन वख खूब हंसदा अर हंसादा भी छना

भूत की कथा : भूत की कथा बड़ी डरावनी, आश्चर्यजनक, और मनोरंजक हूंदिन, गरीब नौनू अर भूत जनी कथा मा त भूत नौना की बड़ी सहायता करदा। सैदू की बारात भूत को डाडूलौ, भूतीण अर लोड़ो इनी कथा छन। राजकुंवरी अर भूत की कथा ता शरीर का अन्दर तक कंपै दींदा गढ़वाळि लोककथों का भूत द्वी बानी का छन। एक प्रकार का भूत वो छन जो मरणा का बाद भूत बणिगिन

और दूसरा प्रकार का भूत वो छन जो शाश्वत छन, ये भूत कभी कैका मृत्यु का कारण बणदिन ता कै थैं लाभ पौंचादिन।

परयूँ की कथा : गढ़वाळ मा भूतू की कथा का तरौं परूयूँ की भी कई कथा छन। ये परी या आंछरी राजकुमारयूं की आत्मा हुंदना। कै कथा मा ये स्वर्ग की अप्सरा छन त कै कथा मा राक्षसूं की राजकुमारी। लेकिन कुछ लोककथा इन भी छन जौंमा ये परी राक्षस का द्वारा हरीं राजकुमारी हुंदिन, ये कभी कै मनखि तै जानवर बणैं दिंदिन त कैतें ढूगों। ये असमान मा उड़दी छन जौं का रंग बिरंगा पंख हुंदिन। जीतू बग्डवाल की गाथा यूं परयूं से ही जुडीं चा येका अलावा स्त्री चरित्र, सुन्दर राजकुमारी अर राक्षस, राजकुमारी अर राजकुमार, बन्दरी अर राजकुमार, नौनों अर परी जन लोक कथा यूं पर्यूं से ही सम्बन्धित लोककथा छन।

समस्या प्रधान लोक कथाएं : गढ़वळि लोक साहित्य मा कुछ समस्या प्रधान कथा भी छन। यूं कथौं मा इना राजकुमारु की कथा छन जो कि कै ऋषि का पास जैकी अपणी समस्या तै समाधान करणा को बोळ्दिन अर वो ऋषि यूं की समस्या का समाधान खुणि कुछ इनी चेतावनी देदिन कि अगर तुम्हारी समणी इन समस्या आली ता तुम इनौ कर्यां। ये सभी लोक कथा राक्षस, राजकुमार, राजकुमार्यूं अर सेठ साहूकारो से सम्बोन्धित हुंदिन।

गढ़वाळि लोक साहित्य लोककथाओं की मथ्थि लिख्यां विभाजन से हटी कै कुछ इन भी छन जौंको उल्लेख ये विभाजन मा नी ह्वेयूं अर ये कथा छन "कहावतों की कहानी अर अश्लील कहानी"। कह. ावतों की कहानी घटना पर आधारित अर सच्ची कहानी हुंदिन जौमा एक उपदेश और संदेश छिप्यूं रैंद। तिमला का तिमला भी खतै अर नांगी की नांगी भी दिखे, एक पर कंटवाल कख जी जालो, सौ सुनार की अर एक लुहार की, नकट्टी देवी को गुंड़डो पुजारी, घ्यूं खतै पर बौड़यूं मा जन कहानी ये ही कोटि मा आण वळि कहानी छन, अश्लील अर यौन सम्बन्धी कान्यूं की गढ़वळि मा क्वी कमी नीच पर समाज ये से बिगची नि जावा ये कारण यूं कान्यूं तैं अवारा लोग

लुकि छिपी की सुणादिन। अब त अपराध कथौं की भी जमानौ ऐगे। गढ़वळि मा इन्न कई अपराध अर सत्य कथा छन जौं तै सुणणू अर सूणाणो एक समै मा गलत मन्ये जांदू छयो।

गढवळि लोक साहित्य की यू कथौं की सबसे बडी विशेषता या च कि यूं की रचना करणा वला अज्ञात छन, यूं सभी कान्यूं मा शिक्षा अर उपदेश हूंदिना। एक ही कहानी कई जगों मा अलग–अलग तरौं से सुणाये जांद या का अलावा ये मनोरंजन अर प्रभावोत्पादक हुंदिन।

गढवाल़ी लोक साहित्य संग्रह कर्त्तोला आज का समै मा गढ़वाल़ी लोक कथा का कई संग्रह करीन, जौंमा श्री अबोध बन्धु बहुगुणा की "लंगडी बकरी" (प्रकाशित) कथा घाळी कथगुली (अप्रकाशित) डॉ० गोविन्द चातक की गढ़वाल़ी लोक गाथाएं तथा श्रीमती सम्पत्ति नेगी संध्या की पक्षियों की गढ़वाल़ी लोक कथाएं प्रमुख छन। ये का अलावा लोक साहित्य का समीक्षाओं मा. श्री मोहनलाल बाबुलकर ला भी कई गढ़वळि लोककथाओं को संक्षिप्तीकरण अपनी प्रसिद्ध पुस्तक गढ़वाली लोक साहित्य का विवेचनात्मक अध्ययन मा करयूं छ। साथ ही साथ गढ़वाळ विश्वविद्यालय श्रीनगर का हिन्दी विभाग ला भी गढ़वाळि लोक कथों पर शीध अर लघु शीध कार्य करें, जो

❐❐❐

अंतर्राष्ट्रीय लोक कथा वर्गीकरण : आर्ने - टॉमसन इंडेक्स

◆ हिमांशु शर्मा

अंतर्राष्ट्रीय लोक कथौं का वर्गीकरण को असली कामै पवाण फेनिस की श्री अंती आर्ने न सन् 1910 मा लगाई। श्री आर्ने को लेख Verzeichnis der Merchenty pen (Index of types of folktales) का नाम से छपे त लोक कथा साहित्यकारो न् अपण–अपण तरफां का लोक कथौं को वर्गीकरण का बारा मा सुचण शुरू करे, आर्ने को वर्गीकरण शुरूवात मा स्कैंडिनैवियन देशु की लोक कथा तक ही सीमित छौ, फिर 1928 मा आर्ने का लेख अर इंडेक्स (Index)को अनुवाद करे अर अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर लोक कथौं को पुनर्वर्गीकरण बि करे हालांकि आर्ने–टॉमसन वर्गीकरण यूरोप या यूरीपीय संबंधीय (अमेरिका आदि) लोक कथौं तक ही सीमित च पण ये वर्गीकरण तैं आधार बणैकि विभिन्न सांस्कृतिक भिन्नताओं तैं एक फर्मामा बिठये जै सक्यांद। आर्ने–टॉमसन इंडेक्स मा 2500 (पच्चीस सौ) आधारभूत प्लॉट छन अर वर्गीकरण ये तरां से च

- जानवरूं कथा (Types 1-299)
- साधारण कथा (Ordinary Tales) (Types 300 to 1199)
  - जादूगरी कथा (Magic)
  - धार्मिक कथा (Religeous)
  - ऐटिओलॉजिकल
  - रोमांटिक
  - मूर्खतापूर्ण कथा
- मजाक अर मनोरंजनपूर्ण कथा (Jokes & Anecdotes) Types-1200-1999
  - मूर्खतापूर्ण
  - बिवयां कजे–कज्याणि कथा

- अणब्यवयां नौनी की कथा
- मूर्ख / होशियार / भाग्यशाली / निभाग्यू की कथा
- धर्म या व्यक्तियूं की मजाक वळि कथा
- झूठों की कथा

➢ नियम– नुस्खा वळा (Type 2000 to 2399)
- पारंपरिक कथा
- पकड़ो कथा (Catch tales) पहेली आदि

➢ अवर्गीकृत कथा (Type 2400 से 2500तक)

आर्ने- टौमसन वर्गीकरण विरोधी ब्लादीमीर प्रौप : हालांकि अबि बि जादातर लोक कथा साहित्यकार आर्ने – टॉमसन का ही तर्ज पर लोक कथौं को वर्गीकरण करदन पण आर्ने–टॉमसन वर्गीकरण का सबसे बड़ा विरोधी रूस का लोक साहित्यकार ब्लादीमीर प्रौप की किताब Morphology of Folktales (1928) छप ज्यां मा ब्लादीमीरन कोशिश करी कि हरेक कथा Function का हिसाब से वर्गीकृत करे जावा पण ब्लादीमीर का वर्गीकरण की भौत आलोचना बि ह्वे।

ऐतिहासिक अर भौगोलिक वर्गीकरण : फिनलैंड का लोक साहित्यकार अर कवि जुलियस लियोपोल्ड फ्रेडिक क्रोहन (1835–1888) न लोक कथौं तैं वैज्ञानिक ढंग से वर्गीकृत करणै सलाह दे, ये वर्गीकरण को नाम छौ ऐतिहासिक–भौगोलिक वर्गीकरण। अंती आर्ने जूलियस क्रोहन का छात्र छाया, क्रोहन को शोध ग्रंथ Suomenkielinen runollisuus ruotisvllam aikkana लोक साहित्याकारूं खुणि एक महत्त्वपूर्ण संदर्भ ग्रंथ माने जांद।

❐❐❐

गढ़वाळि लोक कथौं वर्गीकरण

◆ अबोध बन्धु बहुगुणा

अध्ययन का हिसाब से गढ़वाली लोक कथौं तैं आठ वर्गूं मा बंटे जै सक्यांद :–

- ऐतिहासिक
- क्रमिक विकास संबंधी
- धार्मिक
- हास्य संबंधी
- प्रतीतात्मक
- कहावती
- बाल विनोदात्मक
- संस्मरणात्मक

ऐतिहासिक : वैदिक कालीन खोजुं का आधार पर पंडित हरिराम धस्माणा न गढ़वाल तैं आदि मानव की जन्म भूमि मान। वूँका हिसाब से पंजाब का बजाय गढ़वाळ ही पंचनद च अर गढ़वाळ मा ही वैदिक सभ्यता को विकास ह्वे। श्री केशवानंद नैथाणी को भी तकरीबन यो ही मत छ, नैथाणी जी को बुलण च बल हिम क्षेत्र, अलका, कैलास अर देवपुरी चार प्रजातंत्र राज्य छा अर वूंको राजा शिव छा। नैथाणी जी गढ़वाळि जात्यूं तैं ऋषिकुलुं दगड़ जोड़दन जु इतिहासा हिसाब से इल्लौजिकल छा। हाँ 'इन्द्र धनुष', 'साता माताओं का एक पुत्र' व 'फ्यूंळी' जन लोक कथा वैदिक सभ्यता पर प्रकाश डाळदिन। यूं एकाध कथौं तै छोड़िक जादातर लोक कथौं को संबंध पांडवूं से च। इन माने जांद कि पहाडुं मा जु चौरस जगा च वु भीम को पृथ्वी तैं मुठक्याण (घूंसा) से पैदा ह्वेन। पहाडुं मा जु जलाशय छन वु कुंती का सत्त से पैदा ह्वेन। यूं लोक कथौं मा अगस्त्य जमदग्नि, उषा, शकुंतला कालिदास जन नायक–नायिकौ का वृतांत बि मिल्दो। स्वर्गीय पंडित तारादत्त गैरोला न इनी ऐतिहासिक लोक कथौं को संकलन 'हिमालयन फोक लोर्स' ग्रन्थ मा कार। श्री शिव नारायण सिंह की

गढ़–सुम्याळ (गीति–कथा) मा बि ऐतिहासिक वृति की लोक कथा छन अर या किताब सन् 1928 मा प्रकाशित ह्वे। पंडित भोला दत्त देवरानी की 'मलेथा कूल' एक खंड काव्य माधो सिंह भंडारी का जीवन पर आधारित च, डॉ० गोविंद चातक की 'गढ़वाळ की लघु कथाएं' एक लघु संकलन प्रकाशित ह्वे। इखमा 'जीतू बगड्वाल' अर 'लोदी रिखोला' द्वी कथा प्रकाशित ह्वेन। इनी श्री भक्त दर्शन की "गढ़वाळ की दिवंगत विभूतियाँ" मा कथगा ही ऐतिहासिक लोक कथौं को समावेश च, फिर भी ईं दिशा मा पर्याप्त काम अबि बि अपेक्षित च। आदर्श राष्ट्रीय चेतना अर एकता का बान ऐतिहासिक लोक कथा अर लोक गाथाऊं को पूरो महत्त्व च। गढ़वाळा इतियासा बान बि यूं लोक कथौं महत्त्व च। जीतू बगड्वाल, कप्फू चौहान, कनकपाल , भारत , ज्योतिकराय, पुरिया नैथाणी, तीलू रौतेली, मालू साही, गंगू रमोला,गढ़ सुम्याळ, द्वी भाई रमोला, बैजू की बामणी, बंक्वा हिड़ीया, माधो सिंह भंडारी, रणु–झंकु, लोदी रिखोला अर हीरू –हिंड्वाण मुख्य कथौं की सूचना हम तैं च। यूं सब्यूं संग्रह एक बहूमूल्य सामग्री करी सकद।

क्रमिक विकास संबंधी : महाकवि कालीदास तैं लेकी अब तलक सैकड़ो साहित्यकारूं कृपादृष्टि पहाडु. सौंदर्य पर पोड़ी पण हमर दिखण से यि सब्बि ग्वेरूं बांसुली की धुन, घास काटदी बांद अर वी बांद का अंग–गात तक ही सीमित रैन। इनी चित्रकार अर फोटोग्राफरून बि करे अर गढ़वाळ तैं पर्यटन अर सौंदर्य स्थल तक ही सीमित करी दिने।

हिंदी का कुछेक कथा कारूंन ये क्षेत्र पर आधारित कुछ चरित्र भ्रष्ट कथानकूं से कथा छापिन जु ये प्रदेश का लोगु खुणि बिल्कुल असहनीय छन। यूंन डाळ–बूट, नदियां देखिन पण भूखा पहाडुं का बीच तिसा नदियूं तैं नि द्याखा हालांकि जीवन का सिद्धांत सदानि एकी होंदन पण सुचणौ ढंग–ढाळ अर सामाजिक प्रवृत्तियां हरेक जुग मा बदल्याणा रौंदन।

क्रमिक विकास संबंधी कथौं मा हम तैं यीं सौब बात दिखेंदन,

सुन्ना दीदी, लंगड़ी बकरी, लिंडिर्या छोरा, लीसा की देवी, अपनी माँ, पंचायत–नामा जन लोक कथौं मा अद्य दृष्टि कोण (Primitive outlook) दिखणौ मिल्दो।

कई भाव, कई विचार अर बात यूं कथौं मा' आरण्य सभ्यता' का दर्शन करांदन, पण यूं कथौं मा वैज्ञानिक दर्शन अवश्य ही मिल्दो, वैज्ञानिक सूझ–बूझ का प्रति झुकाव, गरीबी अमीरी का अंतर यूं कथौं मा मिल्दो। यूं कथौं मा परिवर्तन का बान एक मूक अनुरोध च।

धार्मिक : इन मा बड़ बोल नी च बल पैली बिटेन गढ़वाल केदारखंड, बदिरीकाश्रम, गंगाद्वार का नामूं से पछणै जांद छौ अर धार्मिक दृष्टि से ये प्रदेश की महिमा पैली बि छै अर अब बि च। ऋषि मुनियूं न भारतीय दर्शन अर धार्मिक विचारूं की रचना यखका उड्यारूं मा बैठिक करे। अगस्तमुनि, चंद्रकोट, देवलगढ़, ज्वाल्पा, व्यासघाट, महादेव चट्टी, बंदरभेळ, जोशीमठ जनि जगौं मा इन कुछ छ कि अलकनंदा का घाटी मा ज्ञान का टूस फुटेन। ये प्रदेश की लोक कथौं तैं पौढिक इन लगद कि नै अर पुराणी धार्मिक विचारूं तैं संरक्षित करणा बान लोक कथौं को जन्म ह्वे। शैव, वैष्णव, बौद्ध, नाथपंथी विचारधारा गढ़वाळि लोक कथौं मा मिल्दन। अग्नि वतरण, कामधेनु, सदेही, ग्रहण, पाणि पेंदी गैंडी, गण देवता, कृष्ण, गंगामाई आदि कथा इनि छन यूं कथौं मा सौरग–नरक को भय भी च, आ. चरनीति विषयक अर दार्शनिक विषयक कथा बि छन।

हास्य संबंधी : संयुक्त परिवार प्रणाली अर कुछ सांस्कृतिक रिवाजूं कारण भारतीय जीवन मा हास्य (Humour) की कमी रौंदी। हाँ हास्य की अभिव्यक्ति का वास्तव भौत सा रिस्तेदारी द्यूर–भौज, जीजा–स्याळी, समधी–समधण होंदन। गढ़वाळि लोक कथौं मा इलै इ हास्य कम मिल्दो। हाँ कुछ चखुल्या' लोक गीतूं मा हास्य न् अवश्य ही विकास करे, तथापि 'रागस को भाई भेगस (उसकी खोज) जगू फरसा, तिकड़मी, घास की गुंडी आदि हास्य कथा सुणनौ मौका मील। श्री दांत निपोड़ की द्वी एक हास्य लोककथा 'रैबार' गढ़वाळि मासिक मा छपीन।

प्रतीतात्मक : प्रतीतात्मक गढ़वाली लोक कथौं की अपणी खाशियत च। घिंड्वा–घिंडुड़ी, फ्यौंळी, भट्–कुटरू, सरगा दिदा, जना कथा प्रतीतात्मक कथा छन।

यूं कथौं मा परिश्रमी किसाणौं की वैदिक अर रहस्यात्मक प्रवृत्तियूं का दर्शन होंदन। जीते जी साधारण व्यवहार मा त पृथ्वी मा रैण पण मोरणोपरांत फिर फूल, डाळि, पंछी बौणिक प्रकृति दगड़ तादात्म्य पैदा करदन। इखमा जानवर, पक्षी डाळ–बूट, नदी–गदना इनी बात करदन जन मनिख छ्वीं लगांदन। भाग्य अर ईश्वर का स्पर्श होंद भी जीवन को प्रयोजन पूरो करे जांद।

कहावती : कत्ति कथौंन ये प्रदेश मा कहावतूं रूप ल्हे याल, दिख्याण मा यी कहानी छ्वटि छन पर प्रभाव मा बड़ी कथा छन।

- ममा भणजा घौर मुं होला
  सामळ थौळी अपणी खोंला
- मैं त आयो आयो
  पण यू झंगोरी कब आयो
- कैकी छांच बि छोळेंद त कै च
  अर कैकी धोति बि फुकेंदी त कैई च,

असल मा कथा सुणाण वाळ अर सुणदेर यूं कथौं मा इथगा दैं भीजि जांदन कि कथ्य अर बुणावट खतम ह्वे जांद बस रै जांदन त नौणी का रूप मा कहावत अर कहावत।

कृषि अर जलवायु संबधी कहावत भी एक दैं लोक कथा छै, Evils & Goodness को खेल यूं कहावतूं मा मिल्दो। एक लंबी लोक कथा इन मा छ्वटि ह्वे,

भैर फुंडो को छ? चड़क्या चोट
चुला फुंडो देख धैं भुमल्या रोट
भितरैं तीन तनो कनकै जाणो?
ग्यूं भट्ट भुजेन ती द्वी घाणे ।

बाल विनोदात्मक : ये वर्ग मा, वो गढ़ लोक कथा आंदन जु

गढ़वाळि बच्चा पुरणा ढंग का खेल खिलदन। यूं कथा–खेलूं से मना. रंजन त होंदी च बुद्धि चातुर्य बि बढ़दू। खम्भ बुड्या खाडु, अंबू–जंबू अर घुघोति बसोति जन कथा ये वर्ग मा आंदन।

संस्मरणात्मक : परिवर्तन अर घटनाएं जब संस्मरण मा बदल जांदन त क्षेत्रिय लोक कथौं का रूप ले ल्हेंदन। भौत सा संस्मरण यीं श्रेणी मा आंदन। कृषि विषयक, जलवायु विषयक, भौगोलिक विषयक संस्मरण लोक कथाओं मा बदलेकि आंण वाळि साख्यूं खुणि कुछ छोड़ि जांदन।

उन यूं कथौं मा हास्य अर रोमांस की भरमार होंदी। यूं कथौं का जनमदाता जादातर जंतर –मंत्रौ, गारूड़ी, बाकी, औजी, बादी होंदन, और देशुंद बिटेन नौकरी वळा लोग होंदन। यी लोग छौंका लगैक कैं बि घटना तैं यादगार कथा का रूप दे देंदन अर पैथरां या कथा लोक कथा बैणि जांदन।

अर अंत मा –

- हे जुन्नी माता! नय्या कपड़ा हम दीजा
  पुराणा धुराणा अपणा गोरूं–बछरू ल्ही जा।
- कथ्था घाळि कथगुळि, मछवै बुल्द ब्वे,
  ड्वमको सुंगर ल्ही गे बाग, ढुड्यार खाला त?

(संदर्भ : लंगड़ी बकरी : गढ़वाळि लोक कथाएं–भूमिका)

अनुवाद– अश्विनी कुमार ढंग्वाल

❐❐❐

गढ़वाळि लोक-कथाओं को संकलन

◆ रोहित गंगासलाणी

यूरोप का विद्वानूं का प्रयास से लोकसाहित्य प्रकाशन को काम शुरू ह्वे अर फिर स्थानीय विद्वानूं न बि अपणी अड्गैं की लोक कथौं, लोक गीतूं अर लोक साहित्य प्रकाशन को काम शुरू करी।

Himalayan folklore: गढ़वाळि लोक साहित्य प्रकाशन की पवाण ओकले अर पंडित तारादत्त गैरोला न् लगाई यीं किताब को नाम च– Himalayan folklore। यीं किताबौ संदर्भ डॉ० शिवप्रसाद डबराल का उत्तराखंड का इतिहास– भाग–4 पृष्ठ– 13 मा च अर स्वर्गीय अबोध बंधु बहुगुणा रचित 'लंगडी बकरी' का पृष्ठ– 4 मा बि च। बहुगुणा जी लिखदन, "पं० तारादत्त गैरोला ने हिमालयन फोक लोर्स में ऐसी कुछ कथाएं संकलित की हैं "पण द्वी विद्वानों न पुस्तक प्रकाशन को समय नि दे। सन् 1930 से पैली ही या किताब छपी होलि।

पंडित हरि राम धस्माणा और पं. केशवानंद नैथाणी : हालांकि धस्माणा जी अर केशवानंद जी न क्वी लोक कथौं संग्रह संकलन नि करे पर दुयूंन गढ़वाळि लोक कथौं तै आधार बणैक गढ़वाल को इतियास पर कुछ लेख लेखिन।

श्री अबोध बंधु बहुगुणा 'लंगडी बकरी' गढ़वाळि लोक कथा' मा लिखदन," वैदिक कालीन खोजूं तैं संदर्भ बणैक पंडित हरि राम धस्माण ाा माणदन कि गढ़वाळ आदि मानव (वैदिक) की जन्म भूमि च..... इनी पंडित केशवानंद नैथाणी को बि मानण च बल आजै गढ़वालै जाति प्राचीन ऋषि कुल का ही छन 'इन्द्र धनुष', सात माताओं का एक पुत्र, फ्यौंळि आदि कथौं का जिक्र नैथाणी जी करदन"।

डॉ० गोविंद चातक का लघु संकलन : स्वर्गीय अबोध बंधु बहुगुण ाा न लेखि कि डॉ० गोविंद चातक को 'गढ़वाली लोक कथाएं' नाम से एक लघु संकलन 1970 का करीब छपी छौ।

हरीदत्त भट्ट शैलेष की हरी दूब : लंगड़ी बकरी अर गाड म्यटे की

गंगा मा अबोध जी लिखदन कि हरिदत्त भट्ट शैलेश को 'हरी दूब' गढ़वाळि लोक कथाओं को संग्रह प्रशंसनीय कथा संग्रह च।

श्री दांत निपोड़ू : श्री दांत निपोडून गढ़वाळि मा गढ़वाळि लोक कथा लिखीन अर जादातर हास्य प्रधान लोक कथा प्रकाशित करीन। श्री दांत निपोड़ू को संदर्भ श्री अबोध बंधु बहुगुणा की किताब गाड भ्यटेकी गंगा (पृष्ठ–55) अर वूं की किताब 'लंगड़ी बकरी गढ़वाळि लोक कथाएं' मा बि च (पृष्ठ–8)। बहुगुणा जी लिखदन बल, "श्री शाकुंन जोशी द्वारा संपादित रैबार में श्री दांत निपोड़ू ने हास्य प्रधान लोक कथाएं प्रकाशित की हैं।" द्वी जगौं मा प्रकाशनौ समै नी च, पण हम मानी सकदवां कि 1960 से पैली यूं कथौं को प्रकाशन ह्वे। यी श्री दांत निपोड़ू का छया यां पर खोज होण इ चयांद।

ऐतिहासिक ग्रंथ : श्री हरिकृष्ण रतूडी द्वारा लिखित 'गढ़वाल का इतिहास', श्री भक्त दर्शन द्वारा रचित 'गढ़वाल की दिवंगत विभूतियां' अर डॉ० शिवप्रसाद डबराल द्वारा रचित उत्तराखंड का इतिहास 1–8 भाग मा कतनै गढ़वाळि लोक कथौं को विवरण मिल्दो।

श्री अबोध बंधु बहुगुणा की 'लंगड़ी बकरी-गढ़वाळि लोक कथाएं :

श्री अबोध बंधु की 'लंगडी बकरी– गढ़वाळि लोक कथाएं' को प्रकाशन सन् 1961 मा प्रिमियम पब्लिशिंग हाउस, जतन बार, वाराण ासी से ह्वे छौ।

ये संकलन का समर्पण मा बहुगुणा जी लिखदन'' "उन्हें समर्पित है जो लोक कथा हमें सुना देंगे पर लिख ना सकेंगे, 'कथा छपी हैं' सुनकर खबर किसी से होंगे जो गदगद पर पढ़ न सकेंगे"। ये संकलन मा 19 कथौं को समावेश च अर हिंदी मा छन –

- लंगडी बकरी
  - सुन्ना दीदी
  - लिंडरिया छोरा
- स्वीली घाम
  - लड़की पक्षी बन गयी

- ◆ अपनी माँ
- ➢ पटाळ
  - ◆ हिम कहां से आया
  - ◆ सर्प देव राजा
- ➢ झूठा सच
  - ◆ उसकी खोज
  - ◆ ढंफड़ी
- ➢ हरि हिंडवाण
  - ◆ दूर का दीपक
  - ◆ घुघती – बसोती
- ➢ पंचायत नामा
  - ◆ पत्ता और ढेला
  - ◆ जागर
- ➢ काफुल पाको,

श्रद्धेय बहुगुणा जी न भूमिका मा गढ़वाळि लोक कथौं को वर्गीकरण भी करे अर वर्गीकरण पर पूरो प्रकाश बि डाले।

श्री अबोध बंधु बहुगुणा की गाड म्यटेकी गंगा - अबोध बंधु बहुगुणा द्वारा संपादित 'गाड म्यटेकी गंगा' (सन् 1975) परिशिष्ट– 'कथ्था घाळि कुथगळी' मा लिंडर्या छ्वोरा, सुन्ना दीदि, तीला बखरी, मा, काळ, सरगा दादू! पाणि, पार–पणि छः लोक कथा छपीं छन, असल मा यी सब्बि कथा लंगडी बकरी मा हिंदी मा छपीं छन, 'गाड म्यटेकी गंगा' को प्रकाशन श्री स्व0 स्वरूप ढौंडियाल न अलकनंदा प्रकाशन का नाम से करे छौ।

श्री चक्रधर बहुगुणा की दंत कथाएं : श्री चक्रधर बहुगुणा न बि गढ़वाली लोक कथौं संकलन करे वूं को संकलन सन् 1981 मा मॉडर्न पब्लिशर्स देहरादून से 'दंत कथाएं' का नाम से छपे। इखमा पांच कथा श्री चक्रधर बहुगुणा जी न रची छै तीन कथा वूंकी बेटी श्रीमती वीणा पाणी जोशी न रची छै, यूं कथौं को पुर्नप्रकाशन 'गढ़जागर' पत्रिका मा बि ह्वे।

श्री भीष्म कुकरेती द्वारा संकलित गढवाली लोक कथाएं : श्री भीष्म कुकरेती की 'गढ़वाळि लोक कथाएं' अलकनंदा प्रकाशन दिल्ली से सन् 1984 मा प्रकाशित ह्वेन। हिंदी मा छप्यूं ये संकलन मा कुल चौबीस (24) गढ़वाळि लोक कथा छन :–

- चोळी
- अनुभव की महत्ता
- गांव का सयाणा
- गपोड़ियों की गप्प
- गाय की पूछ और भूत
- आग और भैंस पालक
- काफुल पाको
- हल्दी
- बोगसा विद्या
- जैसे को तैसा
- नाथ बन गये
- ज्ञाना–बिंजरा
- पट्ठया चिनखू
- भ्रातृ प्रेम
- छयूंती
- बारात, तिनका और कीड़ा
- भीम और राक्षस
- भेमाता और पेड़
- उल्टी अहिल्या
- छिपकली का घर
- चंपा का पेड़
- ग्रहण
- सियार व रीछ
- मेरी गंगा

चोळी, पठ्ठया चिन्खू जैसे को तैसा (लिंडर्या छ्वरा) अर काफुल पाको सर्वविदित गढ़वाळि लोक कथा छन। बकै सलाण की कथा छन अर कत्ति मल्ला ढाँग तक सीमित कथा छन।

दिल्ली का भौत सा अखबारूं मा यीं कृति पर समीक्षा छपिन। भीष्म कुकरेती को लिखण, "मानव विकास में जब बोली परिष्कृत हुई होगी तो पुरानी पीढ़ी में अपने मैनेजमेंट के अनुभवों को सुरक्षित रखने की समस्या आयी होगी और यहीं से लोक कथाओं ने भी जन्म लिया होगा,"पर समीक्षकूं न नाराजगी बि जताई कि लोक कथा कला अर सामाजिक विकास को अंग च न कि मैनेजमेट को रूखो व्यवहार।

अलकनंदा प्रकाशक श्री स्वरूप ढौंडियाल को बुलण छौ कि ये संग्रह से वू तै भौत फैदा ह्वे अर कुछ किताब भारत ही ना अमेरिका अर कनाडा की यूनिवर्सिट्यूं बटेन खरीदेनी।

श्री भीष्म कुकरेती की 'सलाण बटि' लोक कथा- (Folktales from Salam Garhwal) : यो लोक कथा संग्रह प्रकाशाधीन च अर गढ़वाळि मा च, ये संकलन की लंबी भूमिका च अर लिख्वार का कुछ प्रश्न बि खड़ा कर्यां छन जन कि–

- गढ़वाली भाषा तैं हिंदी से निजात दिलाओ
- गढ़वाली भाषा तैं नेपाली हिमाचली भाषा से अलग रखो
- गढ़वाली लोक कथा संकलनाकार अर विश्लेषकूं को ब्राह्मण ावादः ये लेख मा भीष्म कुकरेती न श्री अबोध बंधु बहुगुणा, भीष्म कुकरेती, श्री मोहन बाबुलकर अर श्री नदंकिशोर ढौंडियाल पर अभियोग लगाई कि यूं चार्यून लोक कथा संकलन अर विश्लेषण मा ब्राह्मणवाद तैं अपणाई अर दलित संबधी कथौं तैं कखि बि जगा नि देई।
- ये ही संकलन मा डॉ0 नंदकिशोर ढौंडियालौ मत कि पंचतंत्र का कारण ही गढ़वाली कथौं मा जानवर संबंधित लोक कथा गढ़े गेन पर श्री कुकरेती न भारी प्रश्न उठाई, अर श्री कुकरेती न ल्याख कि ना, ना विष्णु शर्मा का पंचतंत्र से लोक कथौ मा बदलाव नि आई बल्कण मा तीन हजार साल से ही लोक कथा समाज मा व्याप्त छै। सिर्फ विष्णु शर्मा न वूं को संकलन करे।
- श्री भीष्म कुकरेती न गढ़वाली लोक कथौं तै प्रबंधीय आइना से दिखणै कोशिश ये संकलन मा करे, श्री भीष्म कुकरेती का अप्रकाशित पुस्तक सलाण बटि लोक कथाएं – The Folk-tales from Salan Garhwal मा –

- बाणी विलास पुराण
- गोधन
- किनग्वड़ौ
- खीर की थाळी
- छ्वाया बंद किलै ह्वेन
- सुनार
- निरकारै तपस्या
- बीज निखाण भैरों
- जंतर मंतर की सीख
- घ्वीड़ौ चांठो प्यारो
- पूठा दिखैक बि नाखुश
- आटौ बल्द

- भूत बुबा
- अपड़ी–अपड़ी चालाकी
- रामतेल
- रिक्क को एकी बाटु
- जसपुर मा देवी क मंदिर किलै नी च
- दुर्योधन जनम पैथर किलै?
- भिखारण
- म्यार बुगठ्या
- द्वी बामण हळ्या
- ओगळ की कथा

अन्य– हिंदी प्रकाशन गृह मनोज प्रकाशन दिल्ली न बि एक कथा संग्रह मा तीनेक गढ़वाली लोक कथा संकलित कर्यां छन। हिलांस, चिट्ठी–पत्री, युगवाणी, रैबार, मैती, उत्तराखंड़ै खबर सार, शैल–वाणी आदि पत्रिकाओं मा बि गढ़वाळि लोक कथा छपिंन।

❐❐❐

लोक कथौं का सार्वभौमिक तत्व – गुण अर गढ़वाळि लोक कथा

◆ उमा शर्मा

इन्टरनेट साइट http:// people. westminster college.edu/faculty/kkerr/MOTIFFS.html अर रॉबर्ट्स स्वीटलैंड का नोट्स (www.huntel.net/rsweet_land) मा दुनिया की लोक कथौं का सार्वभौमिक तत्व अर गुणों का बारा मा नोट्स दियां छन। वूं तत्वों अर गुणूं तैं आधार बणैक गढ़वाळि लोक कथौं की विवेचना करे गे :–

सार्वभौमिक गुण:

dFkk ek nkgjko % जादातर कथौं मा दोहराव (repeatition) होंद, असल मा कथा सुणाण वाळ सुणन वाळक ध्यान केंद्रित करणा बान दोहराव की शैली प्रयोग करदो। जौंन गढ़वाली लोक कथा सुणी होली वो जाणदा छन कि दोहराव सबि जगा मिल्दो, श्री अबोध बंधु बहुगुणा संकलित कथौं मा वूंकी ये तत्व की रक्षा करीं च।

ijh{kk % गढ़वाली लोक कथौं मा नायक – नायिका तैं संघर्ष करण पोड़द अर नायक–नायिका तैं कथगा परीक्षाऊं से वाकिफ होण पोड़द, चामै डाळि–बाढ–बाढ जन कथौं मा परीक्षा सामणि दिख्यांदी।

U;k; % बुरै पर भलाई की विजय जागतिक लोक कथौं को एक सार्वभौमिक गुण च, गढ़वाली कथौं मा बुरो मनिख–मनिख्याणि तैं दंड मिल्दो ही च। चोळी, बिंजरा–ज्ञान। कथा यांको उदाहरण छन।

cjkbl vj Hkykbl ek lkQ vrj % लोक कथौं की उद्देश्य समाज मा अंतर्कलह– कलह को खात्मा होंद। ज्यां से लोक कथौं मा बुराई–भलाई, बुरा–भला अर बुरी–भली मा साफ अंतर होंद। गढ़वाळि लोक कथौं मा बि बुरो–भला मा साफ अंतर दिख्यांद।

le;ghurk % जादातर लोक कथौं मा समय हीनता या अपार

समय होंद, याने कि ये कथा समौ की परिधि मा नि बांधैं जांदन। जु कथा या दृष्टान्त समय की परिधि मा बंधे जावन वु कथा जादातर बुसे जांदन। गढ़वाळि लोक कथा बि ये मामला मा अपवाद नि छन।

bfrgkl dh x/k % चूंकि ये कथा भूतकाल से संबंधित होंदन त इतिहास की गंध देंदन या बात गढ़वाळि कथौं पर बि लागू होंद।

l[kkr % सुरक्षा अर संपूर्णता का कारण लोक कथा सुखांत होंदन अर जादातर गढ़वाळि लोक कथा सुखांत ही होंदन।

vkn'kkRed lalkj % लोक कथौं मा आदर्शात्मक संसार की कल्पना करे जांद अर गढ़वाळि लोक कथा ये विषय मा पैथर नि छन।

ydhj ij py.kk pyu % संसार की औरि लोक कथौं तरां गढ़वाळि लोक कथा बि Formuliaic pattern पर ही चल्दन।

लोक कथौं मा निम्न संस्कृति बि पाये जांदन अर गढ़वाली लोक कथा अपवाद नि छन :–

- सुरक्षा
- ड्यार छुड़नौ डौर भौ
- निजड़ी होणौ डौर
- प्यार खतम होणो डौर
- आधारभूत मूल्यों की रक्षा
- बुरो–भलो
- सही गलत
- न्याय–अन्याय
- सुख, दया, खुशी, दोस्ती त्याग, प्रेम

❐❐❐

गढ़वाली कथौं मा प्रबंध शास्त्र की सूचना

◆ भीष्म कुकरेती

गढवाली लोक कथौं मा मिन् प्रबंध विज्ञान का कुछ धागा (Tag or tentacles) तंतु खुजेन।

पैल जिंदगी बचाव : मनिख, जन्तु या वनस्पति को पैलो एकी काम च अर वो च अपण जिंदगी बचाण, कै बि प्राणिको सर्वविदित काम च अपण जिंदगी बचाण अर 'पठ्या चिनखू' मा यो ही प्रबंधन विषय च।

लाइफ कौंन्सियस प्रबंधन विज्ञान च : मार्केटिंग या विपणन या विक्री प्रबंधन मा मन, अहम् अर बुद्धि पर ही सबसे जादा ध्यान दिये जांद। सांख्यिकी अर विपणन प्रबंधन इतिहास बथांदु कि जब बटे विपण ान प्रबंधन की पवाण लग क्वी बि बिजिनेश घर ज्यादा दिन नेतृत्व की खुर्सी पर नि राई। कारण यी व्यापारी घराना लाइफ कौंनसियस पर आधारित नि छया। जादातर ब्रैंड, अह्म, बुद्धि अर मन पर आधारित रैन त यो ही कारण च पिछला डेढ़ सौ साल मा कथगा इ ब्रैंड खतम ह्वेन। लोक कथौं मां लाइफ कौंसियसनेश पर जादा जोर च, चोली कथा को प्रबंध बिंदु यो ही इशारा करद बल क्वी बि हो वे सणि लाइफ कौनसियसनेश (जन्म, सांस, गातवृद्धि, चाल, सतानोत्पति अर मरण) पर ध्यान दीण चयांद।

क्रांति से परिस्थिति बदलो ना कि परिस्थिति से क्रांति : जब बि परिस्थिति मा क्वी बदलाव आवु यानि क्वी क्रांति ह्वावु त वा क्रांति जादा दिन नि रौंदी बल्कण मा क्रांति से परिस्थिति बदलण चयांद। क्रांति माने नयो रास्ता, नयी परिस्थिति अर इखम इतिहास या अनुभव से फैदा उठाण एक आवश्यकता होंद, यानि कि अनुभव से नयो बाटु खुज्याण चयांद अनुभवहीनता से नयो बाटु नि खुज्याण चयांद। गढ़वाळि लोक कथा अनुभव की महत्ता प्रबंध विज्ञान को दि हेल्प–ऑफ हिस्टोरिकल डाटा इन न्यू क्रियेशन की ही बात कर दी।

त्याग प्रबंध विज्ञान को एक अंग होंद : कै बि प्रबंध विज्ञान या प्रबंध कला की किताब पढ़ा वखमा एक बात पर जो ? होंद, अगर कुछ पाणै इच्छा च ता कुछ जादा ही दीण पोड़द। "मातृ प्रेम" लोक कथा मा एक तिल की दाणी हिस्सौ बदल छ्वटु भुला को ब्यौ करेगे, त्याग की महत्ता की कथा च "मातृ प्रेम"। त्याग माने यो नि होंद कि दुनिया से भाजि जावो, त्याग माने जु मिल्दो वे से जादा द्यावो।

सरलतम उपाय सवोत्तम पण कठिन होंद : आज प्रबंध विज्ञान या कला मां कठिनाई या च कि प्रबंधक क्रियेटिविटी का नाम कॉम्पलेक्स परिस्थिति पैदा करणा छन। क्रियेटिविटी को असली अर्थ होंद रास्ता तैं सरल बणये जावु,। मैनेजर अपण नाम कमाणौ बान अपण कॉर्पोरेशनुं तईं कॉम्प्लक्सिटी का तरफ बौड़े दींदन अर कॉर्पोशन एक जंकजाळ मा फंसी जांदन। "गांव का सयाणा" मा प्रबंधक (सयाणा) एक लाटो या मूर्ख दिखये ग्ये पण असल मां यु प्रबंधक सरल तैं कॉम्पलेक्स करदो तबि थ्वरड़ी बि मोरदी अर पर्या बि हथ्युं से जांद।

मनिख्वूं मा भेडिया धसांन : प्रोडक्ट मार्केटिंग हो या पॉलिटिकल मार्केटिंग। इखमा एक बात पर ध्यान दीण पोड़द अर वो वात च कि व्यक्ति भीड़ को अनुसरण करद, मनिख अपण बुद्धि न लोगुं की परसेप्सन (Perception) या माया को खयाल जादा करदो। गढ़वाळि लोक कथा ''घूघूंती'' याइ दर्शादं कि मनिख भीड़ पर जादा विश्वास करदो अर अपण बुद्धि पर कम विश्वास करद।

आधारहीन प्रतियोगिता से निसत्त फल मिल्दो : प्रतियोगिता को असली अर्थ होंद क्रमगत फल जु प्रतिगामी योग्यतौं से पैदा होंदन। यदि प्रतियोगिता आधारहीन होवु त फल अवश्य ही निसत्ती–निखत्ती होलु। गढ़वाळि लोककथा ''गपोड़ियों की गप्पें ''साफ बतांदन कि प्रतियोगिता करण हो त एक आधार प्रतियागिता का बान अवश्य होण चयांद।

परिस्थिति वस्तुस्थिति को परिचायक : प्रबंध विज्ञान को ''रिसर्च" या मन अन्वेषण एक भौत बड़ो अंग होंद। लोगुं को मन टटोळण एक विज्ञान अर कला को संगम होंद। मनिखि क न्याड़ ध्वार की स्थिति,

परिस्थिति, रखरखाव ही मनिखी मनस्थिति तैं उजागर कर्दन। 'बरात, तिनका और कीड़ा" लोक कथा यां पर ही सूतभेद लींदी।

संसाधनुं का हिसाब से रास्ता बणन चयांद : गरीबी की सबसे बड़ी निशाणी च कि गरीब परिस्थिति से फोकट मा लड़नु रौंद अर संसाधन का बान रूणू रौंद, जबकि सत्य याचा निसंसाधन बि एक संसाधन च, जथगा बि चा वे ही संसाधन से स्वर्ग प्राप्ति ह्वे सकदी। ''गाय की पूंछ और भूत'' कथा मैनेजमेंट का विद्यार्थी का वास्ता एक बड़ी सीख च जु बि संसाधन उपलब्ध होवन वां से बि बड़ा या अनोखा काम ह्वे सकदन।

संघर्ष अर जुद्ध मा प्रजेंटेशन (Presentation) **की महत्ता :** मनिख रोज ही संघर्षरत् या जुद्धरत् रौंदु। जुद्ध मा या संघर्ष मा हथियारूं की महत्ता अवश्य होंद पण सबसे बड़ी महत्ता होंद शत्रु का समणि अपणो हथियारूं प्रजेटेंशन (Presentation) इन तरां से करे जावु कि शत्रु लड़न से पैल ही हारि जावु। जुद्ध राजनीति या मार्केटिंग मां प्रेजेण्टेशन की महत्ता पैली बि छै अर आज बि च ''भीम और राक्षस' लोक कथा मा रणनीति मा प्रेजेण्टेशन की महत्ता दर्शांदी।

शत्रुमर्दन मा अपरोक्ष साधनूं जरूरत : प्रबंध रणनीति (Managerial strategy) मा शत्रु तैं हराणौ बान यो जरोरी नी च कि छ्दम या अमणी–सम्यणी ही लड़ै जावु। छद्म रहित अपरोक्ष साधनूं से भी जुद्ध लड़ै सक्यांद। आग और भैंस पालक'' लोक कथा मां छद्मरहित अपरोक्ष हथियारूं की महत्ता बथयेगे।

सरा ध्यान नौली नवाणी साख्यूं (New Generation) **पर होण चयांद :** जीवन अर प्रबंध कला की पैली सीख च कि जीवन अग्वाड़ी की साख्यूं बान जिये जांद, प्रबंधक को पैलो कर्तव्य होंद अग्वाड़ी की साख्यूं पर पूर्ण ध्यान दीण। 'भेमाता और पेड़" लोक कथा यीं प्रबंधन दर्शन पर ही जोर दींदी।

जु दिख्यांद वो ही सही नि ह्वे सकद : प्रबंध विज्ञान या कला मा एक नाम होंद परसेप्सन (Perception) श्रीमद्भगवतगीता का पैला

टीकाकार शंकराचार्य की भाषा मा ये तैं बुल्दन माया। वुंको बुलण छौ "यु जगत माया च–मिथ्या छ, यांखुणि बुल्दन कि एक चीज तैं लोग अपण–अपण मन का हिसाब से दिखदन। दुसरा शब्दों मा यो जरोरी नी च कि जु तुम तैं दिख्याणु च वो ही सही होलू। सत्य अर दिख्याण मा अंतर ह्वे सकद च। "काफुल पाकु" कथा माया (Perception) की पूरी व्याख्या करण मा मददगार च।

मन प्रकृति नि बदल्दी : श्रीमद्भगवतगीता मा भगवान कृष्ण अर्जुन तैं सीख दींदन कि मनिख अपण मन प्रकृति बदल्द त क्रॉस ब्रीड की उपज होंद। मैनेजमेंट मा बि या बात माने जांद बल कै बि मनुष्यै मन प्रकृति नि बदले सक्यांद। जन कि मैंतैं 'सर्फ' पसंद च त यां पर 'एरियल' वाळुँ तैं म्यार मन बदलणै कोशिश नि करण चयांद पण म्यार मन का समणि एक पर्यायी (Aternate) छवि धरण चयांद। मनिख की मन प्रकृति जादातर नि बदलदी "उल्टी अहिल्या" मा या ही सीख च।

दिवास्वपन्न नहीं कर्म भी जरोरी छन : अफु तैं अग्वाड़ी बढाण मां सुपिन, कल्पना, अति कल्पना, दिवास्वप्न भौत ही जरोरी च। पण यूं सुपिनूं तैं फलीभूत करणौ बान कर्म भी उथगा ही जरोरी होंदन। अतिकल्पना अर कर्मू को मिळवाग से ही सभ्यता अग्वाड़ी बढ़द "छिपकली का घर" लोक कथा प्रबंध विज्ञान का वास्ता एक भौत आदरणीय सीख वळी कथा च।

संसाधन अर बुद्धि कौशल खिल्वणी नि होंद : प्रबंधन विज्ञान/कला मा एक बात सिखये जांदी कि बुद्धि कौशल बि संसाधन को एक अंग होंद त बुद्धि कौशल तैं मैंटल कॉपुलेशन (बुद्धि सहवास) या खिल्वणी नि बणाण चयांद। गढ़वाळै प्रसिद्ध लोक कथा "बोगस विद्या" मा बुद्धिकौशल को सही अर जरूरत पड़न पर ही प्रयोग होण चयांद पर प्रकाश डाल्दी।

क्रॉसब्रीड एक सही रस्ता : "चम्पा का पेड़" भौत पुराणी लोक कथा च, इखमा क्रॉसब्रीड की महत्ता पर जोर च।

संसाधनुं तैं गुलाम बणावा : प्रबंध कला को नियम च कि संसाध

ानु को गुलाम नि होण चयांद बल्कण मा संसाधनुं तैं गुलाम बणाण चयांद। "जैसे को तैसा" कथा मा या बात साफ च।

कर्म कबि बि कखिम बि ह्वे ह्वावन वू फल अवश्य दींदन "जैसे को तैसा" मा बि यो हि च।

बुद्धि कौशल को प्रयोग समाज सुधार पर : "नाथ बन गये" लोक कथा साफ बतांदी कि बुद्धिकौशल, योग्यता को प्रयोग सिर्फ समाज सुधार का बान होण चयांद। व्यापार प्रबंधन शास्त्र मा बि यो ही बताये जांद कि व्यापार मा समाज सुधार या समाज का फायदा से ही मुनफा कमये जै सक्यांद। सोसल रिस्पौंसिविलिटी व्यापार प्रबंधन को पैसों अर आखिरी उद्देश्य च।

सहकारिता मा सहयोग दुतर्फा होण चयांद : मित्रता या दगुड़ सहकारिता पर आधारित बिंदु च। पण सहकारिता मा दुतर्फा सहयोग जरोरी होंद, "सियार और रीछ" कथा या बतांदी।

मन की शक्ति और पॉजिटिव थिंकिंग : बगैर पॉजिटिव थिंकिंग से जीत नि ह्वे सकद "मेरी गंगा" लोक कथा यी बात पर ही जोर दींदी।

छूत-अछूत की समस्या चित्त मा बैठ्यूं अहम की उपज : प्रबंध शास्त्र अर ब्रैंडिग मा डेमोग्रैफी की भौत बात होंद। चित्त (मन, बुद्धि, अर अहम) मा अह्म की भौत बड़ी महत्ता च, बाणी विलास पुराण की द्वी लोक कथा अह्म की महत्ता दर्शांदन।

फल प्राप्ति का बान अलग-अलग रास्ता होंदन : उद्देश्य एकी होंद पण उद्देश्य प्राप्ति का वास्ता रस्ता अलग–अलग ह्वे सकदन, कु रस्ता ठीक च यांकी भविष्यवाणी क्वी नि करि सकद,"निरंकारौ तपस्या" मा या बात दिख्यांदी।

तीज त्यौहार याने इवेंट मैनेजमेंट : प्रबंध शास्त्र मा जोर दिये जांद कि सफलता तैं वांटणौ एक सिद्ध बाटु च कि "इवेंट" की रचना। 'गोधन' लोक कथा बि यांकी सीख दींद कि सफलता मनाणौ बान इवेंट(Event) की रचना मनुष्यौ हाथ मा च,

बीच की महत्ता : प्रबंध कला मा क्रियटिव सीड्स की महत्ता

स्वीकारै गे। कृषि प्रबंधन मा बि क्रियेटिविटी की पैली सीढ़ी च बीज–संरक्षण–संवर्धन "बीज नि खाण भैरों" मा या ही सीख च।

प्रयोगूं पर प्रयोग आवश्यक होंदन : सामाजिक रचना धर्मिता या प्रबंधन रचना धर्मिता मा एक्सपेरिमेंट या प्रयोगूं पर प्रयोग की बड़ी महत्ता होंद। 'किनग्वड़ौ कांड' मा एक्सपेरिमेंटिशन (प्रयोग पर प्रयोग) की महत्ता पर ही जोर दिये गये।

मनोविज्ञान का प्रयोग सबि जगा नि होंद : योग, गूढ़विद्या, उपनिषद, गीता क्या छन असल मा यी मनोविज्ञान का सिद्वांत छन। इनी जंतर मंतर बि मनोविज्ञान से अयां तंत्र छन। प्रबंध शास्त्र का ह्यूमन रिसोर्स मैनेजमेंट मा मनोविज्ञान की महत्ता तैं स्वीकारे जांद पण दगड़ मा यो बि सिखये जांद कि हर जगह साइकोलॉजी ही काम नि आंद। "जंतर मंतर की सीख" मा यो ही सीख च कि सब्बी बीमार्यूं की दवा साइकोलॉजी नी च।

वस्तु की कीमत स्थान, समय अर वर्ण/वर्ग से होंद : आज खौंळयाणै बात ह्वे सकद कि एक खीर की थाळी ऐवज मा सैकड़ों एकड़ बौण दिये जावु पण सौ ढाई सौ साल पैल गुड़ कीमती छौ कि खीर की थाली संटर्वा बौण (जंगल) से ह्वे। प्रबंध शास्त्र बि यो ही सिखांद कि कैं बि वस्तु की कीमत स्थान, समय अर वर्ण (Class) निर्धारित करदन "खीर की थाली" लोक कथा या बात बिंगाण मा सक्षम च।

आदत को सुख भौतिक सुखूं से जादा महत्त्वपूर्ण : मार्केटिंग मैनेजमेंट (विपणन प्रबंधशास्त्र) मा एक बात बतये जांद कि ग्राहक अपण आदत जल्दी नि बदल्दन। क्वी बि न्यू कॉन्सैप्ट तैं ग्राहक पर जबरदस्ती नि थोपे जांद गढ़वाली लोक कथा "घ्वीड़ौ चांठ" कथा ये सिद्धान्त तैं दर्शांदी।

संसाधनु (रिसोसेज) की पवित्रता : प्रबंध शास्त्र मा संसाधनू की पवित्रता पर बड़ो जोर दिये जांद। 'छ्वाया बंद किलै ह्वेन' कथा मा संसाधनुं की पवित्रता की महत्ता पर जोर च।

अंहिसावाद : प्रबंध शास्त्र चाहे वु युद्ध प्रबंधन ही किलै नि

हवाव्न, सबि अंहिसा पर जोर दींदना। महाभारत, चीन की "आर्ट ऑफ वार" वौन क्लाउजविट्ज (1823) सरीखा युद्ध शास्त्री बि युद्ध से पैल अंहिसावाद की पैरवी कर्दन। "आटौ बल्द" लोक कथा अंहिसावाद की ही पैरवी करदी।

कृषि प्रबंधन या क्वी बि प्रबंधन स्थान का हिसाब से : प्रबंधन को एक नियम च कि प्रबंधन मा स्थानीयता महत्त्वपूर्ण होंद स्थानीयता की महत्ता "भूत बुबा" मा साफ बताये गे ओगळ बि कृषि प्रबंधन की भौत बढ़िया लोक कथा च।

अपरोक्ष शिक्षा : भौतिक शास्त्र अर रसायन शास्त्र का अपणा सिद्धांत छन। मनोविज्ञान से भौतिक या रसायन शास्त्रुं का नियम नि बदले सक्यांदन। 'सुनार' गढ़वळि लोक कथा को यो ही उद्देश्य च, मन इच्छा से हम पाणि को बहाव का नियम नि बदल सकदां।

टैक्टिस भौतिक होंद : क्वी बि टैक्टिस भौतिक रूप मां ही प्रयोग हवे सकदन गढ़वाली लोक कथा "अपणी अपणी चालाकी" मा या बात महत्त्वपूर्ण छ।

अहम विनाशकारी विनाश : व्यापारिक प्रबंधन हो या राजनैतिक प्रबंधन हो अहम (घमंड) नुकसानदेय ही होंद। गढ़वाळि लोक कथा "म्यार बुगठ्या" घमंड से नुकसान पर केंद्रित च।

परिस्थिति का दगड़ सामंजस्य : मनुष्य की सबसे बड़ी कमजोरी च कि वु परिस्थित्यूं दगड़ लड़न अपणी बड़ै माणदू जबकि प्राकृतिक प्रबंधन का नियम च परिस्थितयूं दगड़ सामंजस्य बढाण। गढ़वाळि लोक कथा "द्वी बामण हळ्या" परिस्थिति का दगड़ सामंजस्यता पर जोर दींदी।

प्रसूति प्रबंधन : दुर्योधन पैथर किलै जनम? लोक कथा मा प्रसूति प्रबंधन की पूरी सूचना च।

❐❐❐

जानवरुं संबन्धित लोक कथौं संकलन
महाभारत बटे पवाण लग

◆ भीष्म कुकरेती

ज्यादातर सामान्य लोग ही ना विद्वानूं तैं गलतफहमी च कि प्र. तीतात्मक (जख मा जानवर नायक–नायिका होंदन) कथौं को प्रचलन पंचतंत्र से ह्वे। लोक साहित्य का विद्वान डॉ० नंद किशोर ढौंडियाल जी न त गढ़वाली लोक कथौं पर पंचतंत्र का प्रभाव की बात करी। या बात ठीक च पंचतंत्र को कथा विन्यास, कथा बुलणौ ढंग ढाळ अपणा आप मा अभिनव च पण जानवरूं तैं माध्यम बणाणै शुरूवात पंचतंत्र बटे नि ह्वे। भारतीय समाज मा या प्रथा वैदिक काल से ही छै, यो ही कारण च कि महाभारत मा दसियों कथा जानवरूं से संबंधित छन।

मि इन बोलि सकदू कि भारत मा प्रतीतात्मक लोक कथा सं. कलन की शुरूवात महाभारत से ह्वे। महाभारत को असली जणगरू बोलि सकद कि महाभारत लोक कथाओं काल्पनिक कथाओं अर सत्य कथाओं ('जय') को संकलन च। महाभारत का पैला श्लोक मा 'जय' शब्द अयूं च जैको अर्थ होंद – महाभारत, इतिहास अर पुराणादि लोककथा अर महाभारत को आस्तीकपर्व (बाइस से बत्तीस अध्याय) मा गुरौ (सर्प) संबंधी कथा उल्लेखित छन। आस्तीकपर्व मा तक्षक आदि बड़ा नाग देवतौं की कथा बि छन। अलग–अलग कथौं से इन लगद कि इ कथा बि कबि लोक कथा इ रै ह्वेलि।

शिशुपाल वध पर्व मा शिशुपाल भीष्म तैं चिढ़ाणौ बान एक लोक कथा को वृतांत दैंदो। शिशुपाल वध पर्व का श्लोक इकतीस से उणतालीस श्लोक मा एक दुर्जन हंस एक पक्षी की कथा चा जखमा अंत मा दुर्जन हंस तै दंड मिल्दो।

नलोपाख्यान पर्व का छसठ अध्याय मा कर्कोट नाग अर नल संबंधित लोक कथा को वर्णन च।

राज धर्मानुशासन पर्व का एक सौ बारा अध्याय मा एक तपस्वी ऊँट का आलस्य का कुपरिणाम की एक मजेदार उपदेशात्मक लोक कथा को वर्णन च। ये ही पर्व का एक सौ सतरवां अध्याय भी एक कुकर का शरभ योनि धारण करण अर एक ऋषि का श्राप से फिर कुकर की जोनि प्राप्त करणै लोक कथा विस्तार से वर्णित च।

ये पर्व का एक सौ सैंतसवां अध्याय (आपद्धर्म पर्व) या अनागतविध ाता प्रत्युन्तमति अर दीर्घ सूत्री तीन माछौं की लोक कथा च। अर भीष्म जी युधिष्ठिर खुणि बुल्दन, "मि एक आख्यान सुणांदु"शांति पर्व का एक सौ अड़तीसवां अध्याय मा भीष्म बुल्दन युधिष्ठिर! ये विषय मा विद्वान पुरूष वट वृक्ष का आश्रय मा रौण वळा एक विलाव अर मूसा का संवादरूप एक पुरातन कथा सूणो, या कथा लोक कथा ही च शांति पर्व का एक सौ तेतालीसवां अध्याय मा एक बहेलिया, कबूतर अर कबूतरी की लोक कथा को वृतांत च,

महाभारत मा इनी दसियों जानवरूं संबंधित लोक कथौं को वर्णन च

महाभारत को उदाहरण दीणौ मेरो मतलब च कि महाभारत से हम समजी सकदवां कि कथा रचणैं प्रथा भारत मा पांच हजार साल पुराणी प्रथा च,

पंचतंत्र को महत्त्व या च कि पंचतंत्र एक विशेष Specialised कथौं को संग्रह च नीति सिखण अर सिखाणौ मैनेजमेंट स्कूल च पंचतंत्र।

जख तक गढ़वाळि लोक कथौं मा जानवरू तैं माध्यम बणाणौ सवाल च। तीला बखरी, चोळी, काफुल पाको, पठ्या चिनखौ, रिक्क

❐❐❐

लोक कथाओं को सामाजिक विन्यास पर प्रभाव

◆ डॉ० राकेश गैरोला

साहित्य समाज को दर्पण होंद अर कै भि क्षेत्र की लोक कथाएं वे क्षेत्र की घटनाओं, परम्पराओं अर सामाजिक स्वरूप की अभिव्यक्ति हुंदिन। जब कै क्षेत्र का समाज मा क्वी खास घटना घटद त वो आण वळि पीढ़ी का वास्ता लोककथा को रूप ल्हे लेंद। उत्तराखण्ड की लोक कथाएं भी येको हि परिणाम छन। लोक कथाओं मा सत्य घटना त समाहित रैंदी हि छन येका दगड़ वेमा आकर्षण बढ़ाणा क वास्ता कल्पना को समावेश भी होंद। लोक कथा नैतिकता को बोध करांदिन अर उत्तराखण्ड की लोक कथा भि यो हि काम करदिन।

आज मनोरंजन का साधन आसानी से मिल जांदिन जो बिल्कुल हाईटैक छन। आज दूर डांडि कांठ्यूं मा भि लोग मनोरंजन का वास्ता–टेलीविजन, रेडियो, सी. डी., कम्प्यूटर आदि उन्नत साधनों को प्रयोग कर्ना छन। वैश्वीकरण का कारण दुन्या सिमटेकि एक गौं का रूप मा बदलिगे। येको प्रभाव गढ़वाळ अर उत्तराखण्ड़ का दगड़ सर्या दुनिया पर प्वड़नू छ। इलै मनोरंजन का परम्परागत साधन भि यां से प्रभावित ह्वीन। पुराणा जमना मा उत्तराखण्ड़ का पहाड़ी क्षेत्र आण जाण का साधनू से महरूम छा। दूर होण का वजै से यखा लोग आत्मनिर्भर छया अर सिरप अपणा समाज तक सीमित छया। भैर का लोगूं से कम सम्पर्क का वजह से सामाजिक विन्यास भी सरल छौ। मनोरंजन का साधनूं का रूप मा अपणा समाज का बीच की घटनाओं तैं आधार बणैये जांदो छौ। यूं पर कथा बणकि घर का बड़ा–बुजुर्ग अपणा बच्चों तै सुणादा छा। यो क्रम पीढ़ी दर पीढ़ी चलदू छौ। ये कथा शिक्षाप्रद अर प्रेरणादायक होंदी छई जो आज भी चलदा आणी छन।

गढ़वाळ की लोक कथाओं मा यखो सामाजिक विन्यास साफ दिखेंद। समाज तैं चलाण मा अर सामाजिक ताना–बाना तैं बणै कि रखण मा यूं लोक–कथाओं की विषय–वस्तु शिक्षाप्रद अर प्रेरणादायक

छन। पुराणा टैम पर गढ़वाळ मा स्कूल इतना नि छया जतना आज छन। इलै बच्चों का नैतिक शिक्षा का विकास मा ये लोक कथा खास भूमिका निभौंदी छई। आज भी घर मा बुजुर्ग दादा दादी नौन्यालूं तैं यी कहानी सुणादिन अर बच्चा बड़ा चाव से सुणदिन।

गढ़वाळ की लोक कथाओं की विषय–वस्तु पारिवारिक रिश्तों से ल्हेकि जंगळी जानवर तक हूंदिन। कै कहानी मा सास मुख्य भूमिका मा हूंद त कै मा शेर दादा। गढ़वाळ का पूरा समाज को ताना–बाना येमा समाहित छ। ये लोक कथाए कखि भि लिखित रूप मा नि छन बल्कि ये पीढ़ी दर पीढ़ी सुणैकि अर याद करि कै चलदा औण ी छन। सास अर ब्वारी की तकरार मा सास तैं ब्वारी अर ब्वारी तैं सास का प्रति अच्छो व्यवहार कर्ना की प्रेरणा, चोरी अर बुरा काम नि कर्नै अर झूठ नि ब्वलणै आदि प्रेरणाओं का वास्ता भी गढ़वळि लोक–साहित्य मा कहानियां प्रचलित छन। फ्यूंळि गढ़वाळ मा मिलण वळु एक सुन्दर पीलू फूल छ अर यखै खास पच्छयाण छ येका बारमा यख फ्यूंळि की लोककथा प्रचलित छ। यूं कथाओं मा गढ़वाळ की भौगोलिक विकटता भी साफ दिखेंद। ये लोक कथा सामाजिक संघर्ष अर सामाजिक विन्यास तैं भी साफ दर्शादिन। शैक्षिक अर मनोरंजन की दृष्टि ये यूको अभिलेखीकरण अर संरक्षण भौत जरूरी छ।

❐❐❐

गढ़वाली लोक कथाएं : जौनपुर का परिप्रेक्ष्य मा

कै भि समाज या कुटुम को अपणो एक संप्रेषण को माध्यम होंद। अपणि बात ब्वनौ अर बिंगाणौ एक स्वाणो ब्यूंत होंद। गौं– गाळ मा यो काम लोक–कथा लोकगीत अर औखाणा करदिन।

गौ–गाळ मा लोक–साहित्य संप्रेषण को एक भल्लु माध्यम छ। गढ़वाळि लोक साहित्य काफी समृद्ध छ। अगर ग्हरें से स्वचें जावां त भारत एक इनो देश छ जख लोक–कथा अर लोक मान्यता को बड़ो भारि समोदर छ, किलैकि यखा अलग–अलग अंचलों मा कतनें पशु–पक्षी, पर्वत, प्रकृति से जुड़ीं लोक कथा छन जौंका माध्यम से हमतैं वे क्षेत्र की रचनाशीलता अर मान्यताओं को भेद मिल्द, खासकर वेद पुराण अर कतनैं प्राचीन ग्रन्थ यूं मान्यताओं पर हि आधारित छन। हमारि धार्मिक मान्यता त यूं कथाओं को सारो ल्हेकि हि अगनै बढ़दिन। भागवत या शिव पुराण आदि यांका खास उदाहरण छन।

वास्तव मा लोक कथाएं हमारी विरासत का एक हिस्सा छन, लोक संस्कृति की अमूल्य निधि छन। यूं कथाओं मा वखों इत्यास, समाज अर संस्कृति त रैंदी हि छ वखा दैनिक जीवन की छ्वटि–बड़ी घटनाएं, सुख दुःख भी दगड़–दगड़ दिखेंद।

लोक साहित्य का ये अथाह भण्डार मा जौनपुरी अर जौनसारी समाज को अपणों अलग ही महत्त्व छ किलै कि यखैं परम्पराए रीत रिवाज मान्यताएँ अर विश्वास खास कै प्रथाएं खान–पान रहन–सहन हौरि समाजों से अलग छ। ये जनजाति क्षेत्र मा अनेकतनै लोक कथाएं प्रचलित छन।

जौनपुरी समाज मां लोग खास खेती–बाड़ी करदा आणा छन। खेती यूंका आजीविका को मुख्य साधान छ। साख्यूं बटि खेत, खल्याण, पौन, पछीं, डाळा बोटों का बीच यखौ मनखि रैंदो बसदो आणों छ अर यखी बटे छाळा छाँटी निकलदन– लोक कथाएं। ये लोक कथाएं ये समाज की प्रवक्ता छन, ये समाज की पहच्छ्याण छन। जौनपुर

क्षेत्र को इत्यास अर सामाजिक व्यवस्था पर नजर डाले जावा त इनो लगद कि विभिन्न समयान्तराल मा कबि यख नागों, सिद्धों को जमघट रै होलो त यखा लोक द्यबतों मा यांकी उपस्थिति जीवन्त अर स्थित छ। अगर वैदिक युग मा दिखे जावा त कतणै किवदन्तियां इन मिलदन जो आज थी यखा समाज मा विद्यमान छन। ये लोक कथा जौनसारी अर जौनपुरी समाज की उत्पत्ति तै बतांदिन बगत–बगत पर आण वळि जात्यूं की संस्कृति तैं समालि कै धर्‌यूं छ– यूं लोक गाथाओं को। माने जो अच्छो अर अपणाण लायक छा। वे फर मान्यता अर प्रथा की मोर लगैकि जिन्दा रखणै विधादत छन ये लोक कथाएं। यूं लोक कथाओं मा लोक साहित्य का माध्यम से स्थानीय 'लोक' को मनोवैज्ञानिक, समाजशास्त्रीय, ऐतिहासिक अर पारम्परिक ज्ञान को प्रमाण मिल्द यूंमा वैदिक, पौराणिक, धार्मिक, वृहद कथा, नैतिक कथा, पंचतन्त्र अर हितोपदेश आदि कथा ग्रन्थों को समावेश भि हम तैं द्यखण को मिल्द।

खास कै जौनपुर अर जौनसार क्षेत्र मा कुछ कथाएं धार्मिक, शौर्य अर वीर–भड़ की हूंदिन त कुछ विशुद्ध मनोरंजन का वास्ता मिसये जांदिन त कुछ भूत–प्रेत डाग–डायन से सम्बन्धित हूंदिन। ये कथा खासकर मुंगरी उदड़ण बगत या गर्मियों मां और दादा–दादी आदि अपणा बड़ो से सुणाणा को मिल्दन। पर आज धीरे–धीरे यूं कहानियों तै सुणाणै परम्परा खतम हूंदा जाणी छ। हरेक गौं मां यूं कथाओं तैं सुणाण वाळा लोग हूंदा छया जो यीं कला का माहिर छा। कथा सूणाण बग्त पात्रों की नकल अर स्वांग भी करदां छया–ये लोगूं मा कुतगळी लगैं दैण मा उस्ताद छया।

लोक कथाओं का निर्माण मा भौत कुछ वखा समाज पर भि निर्भर करदे किलैकि जनो समाज होलो– जनि वखै परम्परा, मान्यता अर आस्था होली उनी तरां की कथा बुणै जाली, मिसये जाली। इन्नी यामुन पर्वत का समणी रैण–बसण वळि जात्यूँ का सामाजिक, सांस्कृतिक अर आर्थिक पल का दगड़ै दगड़ वखै जमीनी पुरूखों अर संघर्षों का सम्बन्ध मा भि लोक–कथाए बणये अर मिसये गेन।

जौनपुरी समाज मा भूत–प्रेत परी–लोक, जादू–टोना, डाग–डायन, चमत्कार, भय, आदर्श अर नैतिकता का इर्द गिर्द घूमदि कतनै लोक कथाओं की भरमार छै।

वास्तव मा लोक–कथओं की आत्मां सब्बि जगा एक जनि छ। वूंकी विषय वस्तु, विचार धारा, रचना–शिल्प अर शैली भि एक जनि हूंद छबटो–वूंकी विषय वस्तु, विचार धारा, रचना–शिल्प अर शैली भि एक जनि हूंद छबटो–म्वये अन्तर तात्कालिक परिस्थितियो का करण ह्वे सकद पर हाँ–इतना जरूय छ जौनपुर क्षेत्र मा लोक साहित्य की परम्परा हौरि जगा से जादा समृद्ध छ, यख आज भि लोक गीत अर गाथाओं की वैभवशाली परम्परां दयखणा को मिल जांदू। कथा अर बातए– गद्य अर पद्य द्वी रूपों मा मिल जांदिन। लोक–कथाओं का अलावा औखाणा, पखाणा, बुझौण, गीत–वार्ता आदि की पुष्ट परम्पराएं थी आज जौनपुर क्षेत्र मा दयखण कू मिलं जांदिन जो मूल रूप से मौखिक हूंदिन अर पीढ़ी–पीढ़ी विरासत का रूप मा अगनै बढ़दा जाणी छन।

सार रूप मा अगर दिखे जावा त ये लोक–कथाए समाज का सामीण्य का साधन जोड़ दिन उदाहरण का वास्ता कतने कथा इनि छन जो जरा हेर फिर करिक मिसये त गेन लेकिन वूंको मूल तत्व एक–सि हूंद फेर कखी –न कखि वेको भूगोल अर इत्यास भि येकी विवेचना करद अर मूल्य स्थापित करद। जौनपुरी लोक कथाओं मा–सात भयूं की कथा, रूप बसन्त की कथा, फूल अर राजकुमार, सुंगर –ए भागवन को रूप, घर की कथा, किरम्वलों की कथा, भूत डायन की कथा आदि कुछ कथा छण जो यखा समाज तैं एक अलग पहच्छ्याण देंदिन अर यखा समाज तै विशिष्ट बणांदिन।

आखिर मा कि बोले सकेंद कि लोक साहित्य मा जौनपुर क्षेत्र की लोक कथाओं को खास महत्व छ अर यीं दिशा मा भौत काम कनै जर्वत छ तभि लोक–साहित्य की भी विलक्षण विधा तैं बिलुप्त हूण से बचाये संकेद।

❐❐❐

काफळ पाको मिन नि चाखो

चैत का मैना काफळ पाकण लगदा। ललांगा अर भूरा–भूरा रंग का रसीला काफळूं से लकदक डाल्यूं मा प्वथील भी चुंच्याण लगदां। इनी प्वथीलूं मा वि एक 'काफळ पाको मिन नि चाखो' वास के वातावरण मा उदासी फैलै देन्दी। जब तक बणूं मा काफळ रौन्दा तब तक यु प्वथील 'काफल पाको मिन नि चाखो' ही बासणू रैन्दु। ये का पिछनैं एक कथा प्रचलित च–

एक बार की बात च। काफल पाकण का मैना एक स्त्री हुरमुर मा जल्दी उठि की काफल बिनणा का वास्ता जंगल मा गै अर बण बटिन टोकरी मा पक्यां–पक्यां काफल भरि के घर मा ल्है। घर मा वि द्वी माबत छा–स्त्री अर वींकी छ्वटि नौनी। बण बटिन काफळ ल्यौण–ल्यौण द्वफरा को चमाकी को घाम लगी। पहाड़ की स्त्रियूं तैं सोफतो कख होन्दु? घर पहुंच के वो पुंगड़ा का वास्ता तैयार ह्वेगे। जांद–जांद विन अपणी छ्वटि नौनी तैं, जु कि अपणी मा कि भौत आज्ञाकारी छै, तैं समझाई– 'बेटी, मेरी बण बटिन ल्यांयी यु काफळ की भरीं टोकरी रखीं। येकू ध्यान रखि। इमा बटिन काफळ आफी नि खै। मि पुंगड़ा बटिन औंण पर त्वे तैं अपणा आप काफळ खाणूं कु देलू। छ्वटि अर मासूम नौनी अपणी माँ का जाणा का बाद काफळ की टोकरी का जग्वाळ मा बैठी। लाल–लाल अर रसीला काफळ देखि की बच्ची कू ज्यू ललचाई अर तैंकु काफळ खाणू कु ज्यू बोलि। तैंका गिच्चा मा पाणी औंण लगी पर माँ की बात वीं तै ध्यान ऐगे। डर का मारा बच्ची न एक भी काफळ गिच्चा मा नि डाली अर मा कु इन्तजार करण लगि। मा तैं घर औंण–औंण देर ह्वेगी। चैत का घाम अर गर्मी का कारण काफळ सूखण लगी। सुखण पर काफळ पिचकण अर सिकुड़ण लगी। सिकुड़ण पर काफळ टोकरी मा कुछ तौळा तक दबीगे। माँ कु घर वापस औंण को समय ह्वेगे। नौनी डर का मार सहमण लगीगे कि काफळ कम ह्वेगी अर माँ वी तैं डांटली। पुंगड़ा बटिन वापस औंण पर माँ न देखि कि काफळ सवेरी की तुलना मा

कम हुयां छा। पुंगड़ा का काम अर गर्मी से माँ तैं भारी पित्ती आयीं छै। टोकरी मा काफळ कम देखि कै माँ न नौनी से पूछि– 'बेटी ये टोकरी का काफळ तिन खाई? नौनी न सच बताई कि वीन एक भी दाणी काफळ की मुख मा नि धरी। नौनी बिल्कुल सच बोलणी छै। वीं कि माँ तैं विश्वास नि होई। माँ न थकान का गुस्सा गुस्सा मा अपणी निरपराध नौनी तैं बिना सोच्यां–समझ्यां इतना जोर से ठैंकुठैं मारी की बच्ची की तुरन्त मौत ह्वेगे।

साम का समय घाम डूबि अर गर्मी कम ह्वेगे। ठण्डी हव्वा चलण लगी। माँ का अपणी प्यारी नौनी का वियोग मा र्‌वे–र्‌वे बुरा हाल छा। माँ का आंसू का संस्पर्श अर ठण्डी हव्वा मा मुरझांयां काफल फिर ताजा ह्वेगे। काफळ की आधी टोकरी मा काफळ फिर फूलिकै अपणी पुराणी स्थिति मा ऐगे अर टोकरी फिर उतिगै भरी जितना कि सवेरि मा छै। टोकरी माँ काफल भर्‌यां–भर्‌यां लगण लग्या छा। माँ न जब टोकरी काफळ से भरीं देखि ता सत्य बात समझ मा ऐगे अर पछताण लगी। माँ तैं अपणी प्यारी निर्दोष नौनी का मौत से इतना बड़ो सदमा लगी कि वा सनकी ह्वेगे अर चिल्लाण लगीगि–'पुर–पुतई पुरै–पुरै' अर्थात् मेरी प्यारी बच्ची काफळ टोकरी मा पूरै च। मिन त्वेतैं गलत समझी। यनि चिल्लादीं–चिल्लादीं माँ कि भी मौत ह्वेगी। मरि के माँ अर बेटि द्वियी प्वथील बणिके आसमान मा उणाण लगी। चैत का मैना मा काफळ पाकण का समय पर यि द्वियी माँ–बेटि प्वथील बणिकि करूण स्वर मा आज भी बासदा –

बेटि प्वथील बोलदी – 'काफल पाको मिन नि चाखो'। माँ प्वथील उत्तर दैंदी–'पुर–पुतई पुरै–पुरै'। काफळ पकण का मैना तक यि द्वियी ये ही बासदा।

ये लोक कथा से हमतैं यि शिक्षा मिलदी कि हमूं तै क्वी बी काम बिना समझ्यां–बूझ्यांल नि कन चैन्दि। ये कु परिणाम भौत दुःखदायी होन्द।

सौजन्य से :– डॉ० राकेश गैरोला

❐❐❐

फ्यूंळि

गढ़वाळ का पुंगड़ो अर बणूं मा एक स्वाणूं सी पीला रंग कू फूल होंन्द, जैतैं हम फ्यूंळि बोलदा। फ्यूंळि का बारा मा एक कथा ब्वले जान्दि कि फ्यूंळि फूल बणण से पैली एक सुन्दर सी कन्या छै। वा एक घैणा बण मा रैंदी छै। फ्यूंळि का दगड़्या जंगल मा भालू, बन्दर, कफ्फू अर हिलांस जनि जंगळी जीव छया। फ्यूंळि सब्यूं दगड़ राजकुमारी का जनि जीवन बितौंन्दी छै। वींकी प्रजा फल–फूल ल्यैकि वींतैं देन्दी छै अर फ्यूंळि इन फल–फूलूं तैं बड़ि चाव से खान्दि छै। फ्यूंळि ये बात से बिल्कुल अजाण छै कि वो कु च और क्या च। फ्यूंळि तुंगनाथ का नजदीकी उड्यार मा रौंन्दी छै। फ्यूंळि कमर मा मृगछाला लपेटी रौंदी छै। ये पोशाक मा फ्यूंळि अष्टमी की जोन जनि स्वांणी लगदी छै। वींकी कमर मकड़ी का जाल जनि पतली छै। जब फ्यूंळि अपणी गुफा से भैर औंन्दी छै ता वींका हाथूं मा किस्म–किस्म का फूल हूंदा छा अर वींकी प्रजा गुफा का दरवाजा मा फ्यूंळि को अभिनन्दन करदी छै। वैं की प्रजा फ्यूंळि की सेवा बड़ा मनोयोग से करदी छै। जै बण मा फ्यूंळि रौंदी छै वख कभी भी मनखी की छाया तक नी पड़दी छै। ये कारण फ्यूंळि न कभी मनखी नि देखि। वींतै यु ज्ञान भी नि छो कि ये जगत् मा मनखी जाति को क्वी जीव भी रौंदु। फ्यूंळि केवल अफू अर अपणी प्रजा तक ही सीमित छै। फ्यूंळि को जीवन एक कविता का समान मधुर छौ। अर वा अपणी प्रजा का दगड़ खेलणी रौंदी छै। प्वथीलू का स्वर का दगड़ जब फ्यूंळि अपणी सुन्दर आवाज मिलै कै गांदी छै ता बण का हिरण भी मुग्ध ह्वेकी नाचण लगदा छा। पौन–पंछी अपणी–अपणी बोली मा गीत गांदा छा अर यनि गीतूं तैं सूणि कि फ्यूंळि भी हिरण का जन नाचण बैठदी छै। ब्यखुनि दौ मा जंगल मा शान्ति ह्वे जान्दि छै। सवेर पौन–पंछी ही फ्यूंळि तैं जगौन्दा छा। बान्दर फ्यूंळि तैं फल तोड़ी कै ल्यान्दा छा। फ्यूंळि दिनभर नाचती–गांदी छै। यु ही वींकु दिनमा को कार्यक्रम छौ। धीरे–धीरे फ्यूंळि बड़ी ह्वे अर ज्वान ह्वेगी।

एक दिन फ्यूंळि एक तालाब मा नाहिणा का वास्ता गै। तालाब मा न्हेणा का बाद किनारा पर बैठ कै कुछ सोचणी छै कि वींतैं कुछ आहट सुणाई दीनि। तभी वींन देखि कि वख एक सुन्दर सि राज. कुमार खड़ो छौ। राजकुमार मोटो–ताजो छौ। राजकुमार फ्यूंळि तैं अर फ्यूंळि न राजकुमार तैं देखि। द्वियी एक दूसरा पर मोहित ह्वेगीं। फ्यूंळि न राजकुमार से पूछी – 'आप कु छा अर ये बण मा क्या कना। मिन आप यखि ये से पैलि कभी भी नि देख्या? राजकुमारन् जबाब दीनि–'मि राजकुमार छौ अर यख शिकार खेलणू आयूंछौ।' फ्यूंळि बोली– 'यख शिकार खेलणो वर्जित च। फ्यूंळि न फिर पूछि – 'क्या ये पृथ्वी पर आप जन और भी लोग रैंदा?' राजकुमारन जबाब दीनि –हाँ, आज बटिन ना बल्कि कई हजार सालूं बटिन अर एक मनखी ना बल्कि करोड़ूं मनखी रौंदा। फ्यूंळि तैं बहुत आश्चर्य ह्वे। वा एकटक लम्बा समय तक राजकुमार तैं आश्चर्य चकित देखदी रैगे। राजकुमार न फ्यूंळि तैं मनख्यूं का संसार का बारा मा लम्बा समय तक जानकारी दीनि। देखदि–देखदि ब्यखुनि ह्वेगि। फ्यूंळिन राजकुमार तैं रात अपणा घर मा रूकण का वास्ता बोलि। राजकुमार सहमत ह्वेगी। फ्यूंळिन राजकुमार तैं वीं ब्यखुन अच्छो आतिथ्य दीनि। बन्दर का फल तोड़ कै ल्यांया। फ्यूंळिन अर राजकुमार न बड़ा प्रेम से भोजन करि। राजकुमार फ्यूंळि से बड़ो प्रभावित ह्वे किलै कि ये से पैलि वेन कभी यनि सत्कार नि पायी छौ। राजकुमार न फ्यूंळि से बोलि यदि ये पृथ्वी मा स्वर्ग का समान सुख च ता वु यखी च।' बात–बात मा राजकुमार फ्यूंळि से बोलि 'फ्यूंळि मि तुमतैं पसन्द करदू अर तुमसे ब्यो करी तुमतैं अपणा महल मा लिजाण चान्दू।' फ्यूंळि दुविधा मा पड़ी। एक तरफ त वा राजकुमार से प्यार कर्न लगीं छै अर दूसरी तरफ जंगल का वींका दगड़्या, जों तैं कि फ्यूंळि छोड़न नि चान्दि छै। अन्त मा फ्यूंळिन यौवन का उन्माद मा अपणी प्रजा का वात्सल्य तैं पिछनैं धकेल दीनि। फ्यूंळि राजकुमार से ब्यो करिकै महल मा जाणू तैं तैयार ह्वेगे। जब फ्यूंळि की प्रजा तैं वींका ये निर्णय का बारा मा पता चली ता सभी दुःखी ह्वेकी रोण बैठिगीं।

फ्यूंळि तैं लगणूं छौ। फ्यूंळि न अपणा सब दगड्यों तैं समझाई कि राजकुमार का दगड़ तो वो ब्यो कनी। वा कभी भी अपणी प्रजा तैं अपणा दिल से दूर नी करली। वींकी प्रजा न फ्यूंळि से एक वायदा लीनि कि फ्यूंळि वूं तैं कभी भी नी भुलली। फ्यूंळिन वायदा करी। बण का जीव–जन्तु फ्यूंळि की राजकुमार का दगड़ ब्यो की तैयारी करण लगी। फ्यूंळि तैं ब्योळि बणैकि वींका सब्बि दगड्या भौत खुश छा। ब्योली का लिबास मा फ्यूंळि परी से भी स्वांणी लगणी छैं फ्यूंळि का विदाई को समय आई। सभी जंगली जानवर भौत दुःखी छा। सब्बि जंगल बटिन फ्यूंली तैं अपणी–अपणी तरफ से जंगली फलों की समौण ल्ये के आंया छा। भीग्या आंखों से वूं न फ्यूंळि तैं विदा करी। फ्यूंळि भी अपणा दगड्या अर प्रजा से विदाई का समय भौत दुःखी छै। जाण दफै सब्बि जानवरूंन फ्यूंळि तैं फिर आणू को न्यूतो दीनि। फ्यूंळिन अपणी प्रजा से दुःखी ज्यू से विदा लीनि।

अब फ्यूंळि राजकुमार का दगड़ महल मा ठाठ से रौण बैठगै। राजमहल मा वींकी सुविधा कू पूरा ख्याल रखैणू छौ। फ्यूंळि की सेवा मा कतनै नौकर–चाकर लग्या छा। महल मा वैंका वास्ता कै भी प्रकार की कमी नी छै। ठाठ–बाट की सब्बि समाग्री वींका पास वख उपलब्ध छै। पर फ्यूंळि को मन महल मा नि लगणू छौ। वींतैं अपणा जंगल की प्रजा अर दगड्या की याद कुरेद–कुरेद के आणी छै। अब फ्यूंळि पछताणी छै कि वींन अपणा बचपन का साथी अर घर किलै छोड़ी होलो। वींन अपणू यु दुःख महल मा कै मा नि बताई। अपणा दगड्या की खुद मा अर जंगल छोड़णा का पश्चाताप मा फ्यूंळि धीरे–धीरे बीमार पणण लगी गे। बीमारी का कारण फ्यूंळि कमजोर भी होंण बैठी गे। राजकुमार फ्यूंळि से भौत प्यार करदु छौ अर वींकी हर समय फिकर करदू छौ। महल मा फ्यूंळि की हालात देखि कै सभी लोग भौत चिन्तित हौण बठीगा छा। फ्यूंळिका भौत इलाज करी पर क्वी भी फैदा नी होई। फ्यूंळि अब सूख के कांटा बणिगे छै। महल मा कैका समझ मा नि औणूं छौ कि फ्यूंळि तैं आखिर क्या होई। राजकुमारन फ्यूंळि को धैर्य बधौण को अर बीमारी

को इलाज को हर एक प्रयत्न करी पर विधाता तैं कुछ और ही मंजूर छौ। फ्यूंळि मृत्युशैय्या पर लेटीगि। वींकु अन्त समय ऐगे। राजकुमारो कु वींकु सिर अपणी क्वोली (गोद) मा रख्यूं छौ। राजकुमार फ्यूंळि तैं धैर्य देंणू छौ कि वु फ्यूंळि तैं यमराज का घर बटिन भी वापस ल्योलु पर फ्यूंळिन सिर हिलाई अर मरदि बगत राजकुमार से वचन लीनि– 'अन्तिम समय मा मेरी इच्छा पूरी करण तुमन।' राजकुमारन् पूछी– 'बोल फ्यूंळि, बोल क्या अन्तिम इच्छा च तेरि?' फ्यूंळिन मुरझांई आवाज मा बोलि– 'यदि तुम कभी अज्जि शिकार खेलण बण मा जैला ता मेरा भै– बन्धु बण का जानवरूं तैं नि मर्‌यां अर मरणा का बाद मीं तैं वखि वे डांडा का तालाब का नजदीक खड्यांया (गाढ़ना) जख मेरा बचपन का भै–बन्द जंगली जानवर रौंदा।' राजकुमार की आख्यूं मा आँसू की धार बगण लगि अर इतिगा बोलि कै फ्यूंळि का प्राण पखेरू ह्वे गिनी। राजमहल मा चर्या तरफ शोक की लहर छैगे। फ्यूंळि का वचन का मुताबिक राजकुमार न वे दिन बटिन जंगली जानवरूं को शिकार करण बन्द करियाली। फ्यूंळि तैं वींकी इच्छा मुताबिक वे ही तालाब का किनारा खड्याई ग्याई। कुछ दिन बाद वे जगह पर एक स्वाणुं सी नन्हों पिंगलो फूल उगि आई। यु फूल फ्यूंळि का जनि ही स्वाणु छौ। कुछ दिन बाद राजकुमार दुबारा फ्यूंळि की याद मा वी जगा वींतै श्रद्धांजलि देणा का वास्ता गे ता वे सबसे पैलि वु ही स्वाणु सी पिंगलो फूल देखि। फूल देखद ही वेका मुख से अनायास निकल ग्याई 'फ्यूंळि, फ्यूंळि।' तब से वे पिंगला फूल को नाम फ्यूंळि पड़ि ग्याई। बसन्त का मौसम मा यु फूल सबसे पैलि विकसित हौंदु। येकु रंग ही बसन्ती हौंदु। यु फूल आज भी उत्तराखण्ड की ध्याण्यूं तैं वूं का मैत की याद दिलांदु। फुलफुलमाई/फूल सगरान्द का दिन नौन्याळ ये फूल तैं बिणदा अर सबेरि–सबेरि गौं का घरूं का देल्यूं मा डालदा जुकि सबेरि–सबेरि मा सबको मन प्रसन्न करि देदुं। फ्यूंळि आज भी ये स्वाणिला फूल का रूप मा अमर च।

सौजन्य से :– डॉ० राकेश गैरोला

❑❑❑

महासू अर हूणा भाट

भौत साल पैलाकि बत्था छन, द्वी डांडौ बीच एक नदी छै अर नदी का छाल पर एक गौं छौ। नदी का दुसरा छाल पर एक बड़ो उड्यार छौ, उड्यार पुटुक एक रागस रौंद छौ। रागस बडो निर्दयी छौ अर वेकी खुराक सिरफ मनिख ई छा। इ राम दा, वेका डौरान लोखारून अपण ड्यारम बटि भैर औण बंद करी दे छा। भौत दिनूं तक क्वी बि मनिख अपण घौर से भैर नि ऐन, इन मा कथा दिन चल्द। गौं का लोखारून रागस को दगड़ एक समझौता करी, समझौता यू छौ बल गौं वळा रोजाना एक मनिख तैं रागसम भेजला अर रागस एक दिन मा एक इ मनिख तैं खालो –गांव मा पांति लगी गे अर गांव बटे एक मनिख तैं रागसो (राक्षस का) उड्यारम भिजे जांदा छा अर रागस वे मनिख तैं खैक लंपसार ह्वेका स्ये जांदो छौ। सनै सनै कौरिक गौं की तादात कम होंदी गे। अपणी मौतौ पांती आणौ डौरान लोखारूं मन खाण, पीण, सीण, खाण–कमाण मा लगदो इ नि छौ। वे ही गौं मा एक बुड्ड़ी बि छै, ए राम दा बुड्ड़ी का सात नौन्याळ छा अर छै त रागस का पुटगी जोग ह्वे गा छा। अब बुड्ड़ी तैं अपणो सबसे काणसो नौनु तैं बचाणै पोड़ी छै कि कनै कौरिक बि ये नौन्याळ तैं बचये जावु। वीं बुड्ड़ी न अपणो सातौं नौनु तै ब्वाल ब्यटा त इख बटें भाजि जा। 'ना ना ए ब्वे त्वें तै इखुल्या इखुली छोड़िक मिन कथैं बि नि जाण', नौन्याळ बोलि। ये मेरी केकी फिकर मि त सि अब मोरलु अर तब मोरलु। तू बच्यूं रैल त हौरू तै बि बचैलो बुडड़ीन समझाई। नौनन पूछ, 'कनकैक ए ब्वे,' बुड्ड़ी न ब्यूंत बथाई तू इन कौर इख बटे कश्मीर चली जा उथै उखाक महाराज रौंदन, महाराज हमारी रक्षा करल। तू महाराज मा जैकी अपणी रूणी–झाणी (व्यथा–कथा) बथैल त महाराज क्वी ना क्वी इंतजाम करी द्यला। नौना न ब्वाल, पण ए ब्वे, मैं सणि त कुछ बि मालुम नी छ बल कश्मीर जाणो बाटु कनै च कथैं च अर वु बाटु कनु च। ''ब्यटा, तू चलणै तयारी कौर, बाटु अफिक मील जालो अर म्यरो आशीर्वाद त्यरो दगड़ च बुड्ड़ी

न ब्याल अर ढ़ांढ़स दिलाई। ब्वे को आशीर्वाद लेकी वु नौनु कश्मीर जिनां चलण बिस्याई, कश्मीरौ बाटु मा वे तैं भौत सी कठिनाई ऐन। भूख तीस, खुब्या, ठोकर सब्बि कठिनायूं तैं पार कौरिक वु बीर नौनु कनि कौरिक बि कश्मीर पौंछ।

कश्मीर पौंछ त थक थौकन वे तै जोर की नींद ऐगे अर वु बीच बाटु मा से गे। वु सियूं छौ कि राजा का पहरेदारूं की नजर वे फर पड़े अर वूंन वे सणि बिजाळ अर पूछ, तू कथै को बटोई छै अर कै गौं को छै अर इथैं किलै ऐइ। वेन बथाई मी दूर एक पवर्तीय प्रदेश बटे अयूं छौ अर मिन महाराज का दर्शन करणी, महाराज का दर्शन भौत जरोरी छन। पैल त पहरेदार नाराज ह्वेन पण वे नौनान जब खूब हाथ–पाँव जोड़िन अर अपणी बिपदा बथाई त पहरेदार वे नौनू तै महाराज का सामणि ल्ही गेन। महाराज न पूछ, 'तू कु छै अर त्यारो नौं क्या च' वेन ब्याल, म्यारा नाम हूणा भाट च महाराज का पुछण पर हूणा भाट न अपणी गौं की ब्यथा महाराज तैं सुणाई। महाराज न ब्यथा कथा सूण, कुछ देर तक घड़याई अर वे नौनु तैं धीरज ढाढस द्याई, अर ब्याल "हूणा भाट त्वेतैं अब डरणै जरोरात नी च। मी त्यार अर त्यार गौं वळों दगड़ छौं। अर जै दिन तू अपण गौं पौंछली मी बि वै दिन त्यारा गौं पौंछि जौंलु"।

महाराजा का सांत्वना दीणोपरांत हूणा भाट अपण गौं का तरफ बौड़ि गे। गौं पौंछण पर वेन महाराजा की बात सब्बि गौं वळों तै बथाई, गौं वळा राक्षस विहीन गौं की कल्पना से पुळ्याणा छया, खुशी मनाणा छया। अब सब्यूं तैं रागस–मुक्ति की आशा लगी छै अर वे दिन की जग्वाळ मा छया जै दिन रागस से मुक्ति मिलली।

हूणा भाट न् सोना को हौळ–ज्यू तैयार करे, फिर द्वी इन बौड़ खुजेन जु इकसनि ह्वावन अर इन गौड़िक का ह्वावन जैं गौड़ि पर न क्वी घौ (घाव) होवु अर जैंका पूरा का पूरा अंग जन्या का तन्य होवन।

सोना का हौळ–ज्यू तैं हूणा भाट न वू बौडू पर जोत अर ये अनुष्ठान तैं दिखणौ सरा गौं वे चौड़ पुंगड़ मा अयां छया। हूणा

भटट् न जनि हौळ चलाई कि निसुड़ कै ठोस चीज पर टकराई अर फटाक से वुखम चार मूर्ति प्रकट ह्वे गेन। हूणा भाट तैं महाराज की बात याद ऐन। महाराज न बोलि छौ," जब निसुड़ कै ठोस चीज पर टकरालो त समज ले कि रागस को अंत ह्वे गे। अर समज ले कि 'मी' तेरा गौं पौंछि ग्यों"। हूणा भाट न गौं वळों की मदद से मूर्तियूं तैं भैर गाड अर वूं चार मूर्त्य नौं धरे–महासू चालदा, पावसी अर बाशिक, अर चर्रि मूर्त्यूं तैं थरपणौ बान उठाणौ गाडे, वे समौ पर ही महेंद्रथ, को नाम हनोल रखे गे अर महाराज की शक्ति देखीक राक्षस घबराण बिसेगे। रागस का पुटकुंद कुखड़ बांग देकी बासण लगी गेन फिर रागस का पुटकुंद देवदार का डाळ पैदा ह्वेगे। देवदार की फौंकी रागस का नाक, कंदूड़ आंख्यूं, गिच्ची बिटेन भैर आण बिसे गेन। रागस वूं फांक्यूं तैं जनि काटदो छौ फौंकी हौर बि बढ़दा जांदा छा अर इन मा रागस मोरि गे। गौं वळों तैं रागस से मुक्ति मीलि गे। अर सरा रोवंल्टी उड्गैं मा महासू की पूजा की पवाण लगी, आज बि रवांल्टी अड्गैं मा महासू दिवता की पूजा हूंदी।

संकलन :– महाबीर रवांल्टा
अनुवाद :– श्रीमती चंद्रकांता रघुवंशी

❐❐❐

बीरा बैण अर पंचभैय्या

ऐगीन माचू निरफाक्ना, लमडेर ढणकै–ढाणकैक घर, काम का न काज का भैरगड्डा माचू। अब कना पाळ्नीन तुम घुळ्न का भारी। न होंदी तुम पाँच गेंडका कर माचू अर एक ब्येटुली होंदी कुलैं कि डाळी कर लुप लुप्या, फण्ड होन्दी किर्पचाण्या। वींन ब्वे–बाबू कू खूब दर्द कर्नि छऊ, पर यी खराण्या माचू त अपड़ा पिछाड़ी बैण नि ल्हया। कना होयें तुम सब्बि करड़ी पिठी का, लुकारा भाई कौ–कर्ज बार–त्यौहार मजि बैण्यों का सैसर जाला, बैण्यों तैं बुलाला तुम ग्वाण्यों न कैमा जाणी अर कु बुलौणी। जब लुकारी बैणी मैतु आली तब तुम कना रैल्या निराश्यां, कनि ह्वे तुमारी दिशा सुन्न।

पंचभैय्या अपड़ी ब्वे का यना बोल सुणी–सुणी क दिक्क ह्वेगी छा। वूंतैं भि बैण कि कमी सतौंदी छई। लुकारी बैण्यों देखि–देखिक वो पेट का आंसू रौंदा छा। हमारि भी एक बैण होंदी त....। बिचारा पैलि हि दुःखी छा ऐंच बिटि ब्वे का बोल, सुणी–सुणीक वूंकु दुःख जादै बढ़ि जांदू छौ। जब वूंका धिन्त धिन्त ऐगे अर पित्त –पित्त भरे गिन तब वूंन आफुमा सल्ला करे अर फैसला घर वालौं तैं सुणै दिने। "हम बणबास मा जाण लग्यां छा। हमारि भुली होली त हम घर औला अर जु भुला होलू त कभि घर नी औण्या।''

यथका बोलीक पंचभैय्या अपड़ा–अपड़ा कुल्हाड़ा कांध मा धारीक बणबास मा चलिगेन। घनघोर जंगल मा पंचभैय्या कांस–पात कि झोपड़ी बणैक वख मा रैण लगेन। दोफरा सि पैली जंगल मा लखड़ा काटणा अर दोफरा का बाद बाजार मा जैक बेचणा वूंकी रोज कि दिनचर्या बणिगे। टेकु–टिकाणू जमण पर वो गोरू–बाछरा भि पळन ल्हैगेन, कांस–पात कि झोपड़ी का ऐथर उच्चा डाला मति चढ़ीक पंचभैय्या रोज अपड़ा कुड़ा कु धुरपळा देखण कि कोशिश करून कभी रात–वृत गौं का नजिक ऐक धुरपळा ऐंच हळसुंगु–जुवा देखिक पंच्या भाई खौलेगिन। असल बात या छः कि नौनी का होण पर घर कौन सुप्पी–गिंज्याली फुण्ड गाडीक हलसुंग–जुवा धरि दिने। धुरपळा

मति हलसुंगु जुवा देखिक पंचभैय्या न प्रण करे अब हम कभि घर नी जाण का। वथैं वूंका ब्वे–बाबू रोज–रोज वूं तैं जग्वाळ्दा रैगिन पर वो घर नि बौड़्या। वो नौनी का होण कि खुशी मा नौन्याळु का घर नि औण कू गम भुलिगेन। नौनी खूब होण्यासली छई, लुकारा बच्चा जौ भर बढून त वी द्वी जौ बढू। पुरोहित जी न वींकू नौ बीरा रखे। वा सचमुच मा बीर नौनी छई, वा समझदी छई कि वींकू क्वी भाई नी। भाई का बिना वा माछी जनि तफड़ान्दी रैंदी छई। एका दिन वीकी गैल्याणी न वीं तैं बतायें–हेली बीरा मेरा द्वी भाई छन, तेरा त पाँच भाई छैं छन, तेरा भाई घनाघोर जंगल मा रंदन जख वो धुँवा दिखेणू छ।

पांच भायौं कि एकली–एकून्त बैण– बीरा बैण। न भायौं तै पता कि वूंकी एक बैण छ अर न बैण तैं पता कि वींका पाँच भाई छन। गैल्याणी की बात को विश्वास करीक वा भायौं कि खोज मा चलि दिने। चौदह–पन्द्रह वर्ष कि नौनी बीरा, लपलणी, सपसपी भिमल कि छटली, सुटौं कि फळि जनि पितळी, कटकांपळी पर होण्यासळी। ज्यूड़ी–दाथी लीक भायौं खोजण बण जथैं चलि दिने। बीरा जंगल का पंछी अर मेंढक, छिपाड़ा वींकी मदद मा तैयार बैठ्यां छन। पंछी वी सणि बाटू बताओन त मेढका–छेबाड़ा वींकू बाटू सुधारून। गैरी खाई सि अगाड़ी जान्दी बग्त वीं तैं औखी औण ल्हैगे त चुड़ौ ऐक सामणी खड़ू ह्वेगे। वींन हाथ जोड़की बोली, चुड़ौ दिदा मैं सणि बाटू बतौ, चुड़ौ न अपड़ा फण मति बैठालीक वीं तैं गैरी खाई पार करै दिने। सब जगा डाला–बुर्दा, झड़ी झंकार पार बाटू कखि ना, अब बीरा कख जावो। बीरा भट्याणें! रिक्ख दिदा, रिक्ख दिदा मैंतै बाटू बतौं रिक्ख न वा खोंगलापर उठैक झाड़–झंकारू, बिट्टा ओढारू अर ढौंड–ढंगारू सि पार करै दिनि यन्नि कैक चल्द–चल्द कई बासौं बसीक बीरा बैण अपड़ा भायौं की कांस–पात कि झोपड़ी मा पौंछिगे। तबारि क्वी घर मा नि छौ अर वूंका गोरू भि बण फण्डा चर्न जायां छा। दोपहरा म पंच भैय्या भुक्खा–तिस्सा, पक्यां थाक्यां घर पौंछेन। झोपड़ी भितर जान्द हि सब्यौन एक नई खुशबू सि महसूस

करि। रस्वाड़ा भितर खीर का भभकरा वूंका नाकू पर पौंछेन त वूंका गिच्चौं पर न तई देणी ललदारी छुटि पड़ेन। हाथ–खुटा ध्वेक सब्बून सपोड़ा–सापोड़ी खीर छकै। यनि स्वादिष्ट खीर कैन बणाये होली वो सोच मा पड़िगेन। हमारी बैण होंदी व यनि स्वादिष्ट खीर बणै सक्दी छई, बैणी का अलावा क्वी यनि खीर बणै हि नि सक्दू। छवीं लान्द–लान्द सबु तैं निन्द ऐगे, हैंका दिन सबेर कु वो जंगल निकलिगेन अर दोफरा मा घर पौंछेन, आज वूंकी झोपड़ी जादे छः चमलाण लगीं। यनि चलमल देखिक वो अचम्भा मा पड़िगेन। अमणी भी स्वादिष्ट खीर खैक पंचभैय्या तिरपन्त ह्वेन खीर बणौंदारा अर झोपड़ी मा चमलोट करदारा कि खोज त कर्न हि पड़ली, अगल्या दिन काण्सू भाई यांकू पता कर्नक घर मा हि रैगे, वे कामकुट्टा मन्खि तैं थोड़ा आराम मिले त वे सणि गर्र–गर्र निन्द ऐगे।

बीरा ढाईपुरा भिटि सरक देणी उतरे अर झटपट खाड़–पात सोरे, खीर पकाये अर फिर वक्खि ढाईपुरा लुकिगे। खीर बणौंदारा की जग्वाळि करदारा की निन्द तब खुले जब खीर बणौंदारू जगा पर पौंछिगी। वेन भायौं मा बोली दिदौं मैंन क्वी नि देख्यू, मैं सणी परजमाना कि निन्द पड़िगे छई। फिर बारी–बारी कैक काण्सू, बिचल्यू, बिचल्यू–बिचल्यू अर ठुलु बिचल्यु भाई भि घर रैन पर सबु तैं निन्द आई जावो। खीर पकौंदरा तैं क्वी नि पकड़ी सक्यू। आखिर मा ठुलु भाई घर मा रूके गैरी निन्द मा सेण कू नाटक करे जब वो निन्दा मा घुगराण ल्हैगे तब बीरा ढाईपुरा भिटि उतरि, झटपट खाड़ सोरे, झाड़ू लगे पोचा चुल्हा–चौका करे खीर बणाये अर ढाईपुरा जथैं लुकण बैठे। ठुलु भाई चम्म देणी खड़ उठे अर बीरा तैं रोकीक बोले, "तू हमारी भुली छै कि क्वी आंछरी मांतरी छै"। "मैं तुम्हारी भुल्ली छौं, मैं तुमतैं खोजण घर भिटि भागीक आयौं," धुरपुला ऐंच हळसुंगु–जुवा देखिक हम निराश्यां छा"।

ठुलु भाई भैर आये अर खुशी मा अपड़ा भायों तैं भट्याणे, "हे भुलौं घर आवा झटपट, हमारी बीरा बैण मिलिगे", सुणीक सब्बि भाई दौड़ी–दौड़ीक घर आयेन। सब्बुन बीरा भुली अपड़ी अपड़ी कांध मा

उठाये, अंग्वाल्ठा पर भट्ट–भटकाये, खोंगला पर धरे पंच भैय्यों कु जनु त्यौहार ह्वेगी हो। देर तक वो खुशी मा नाचदा रैन। अपड़ा बणमन्खी बण्यां भायौं देखीक वा डरिगे छई, वूंका जोगा–दाढ़ी अर लम्बी–लम्बी जटा देखिक वीं भारी डर लग्दी छई, तभि त वा खीर बणैक लुकि जान्दी छई अर वूंका सामणी नि औंदी छई।

पांची भाई अपड़ी प्यारी बीरा भुली की सुख–सुविधा को पूरो ध्यान रखदी छा। वींतैं कैई भी चीज कि कमी नि होण देंदा। बण जांदी बग्त ठुला भाई न बोले "भुली छज्जा मा बैठीक मुण्ड नि कटोरी हो। फिर बारी सि साबून बोली भुली छज्जा मा बैठीक मुण्ड नि कटोरी हो। बीरा न भायों कि बात मानीक छज्जा मा बैठीक मुण्ड नि कटोरी।

एका दिन वीं जाणमन्ति बैठी, वीन सोचे भायौं न वीं तैं छज्जा मा बैठीक मुण्ड कोर्न सि किलै मना करि होलू। वा जाणी–बुझीक वूंकी बात परेखक छज्जा मा बैठीक मुण्ड कोर्न ल्हैगे। मुण्ड कोर्द–कोर्द वींका हाथ पर न कांगलू छट्ट छुटीका गुठ्यार पड़िगे, गुठ्यार क्या छौंदड़ा पड़िगे।

छौंदड़ा कि गैरी खाड़ पर एक राक्षस रैंदु छौ राक्षस का उत्पात सि तंग ऐक पंच भैयों न वे सणि छौंदाड़ा कि खाड पर खडै याळि छौ। वे तैं वूंकू बतायूं छौ कि तू खाड़ सि भैर नि अई सकदू। वेकी शर्त छई कि छौंदड़ा पर मेरू राज पाट रलू, अर जुक्वी छौंदडा मा आलू त मैं वे सणी जिन्दू हि खै द्योलू। यीं बात पर दुया पक्ष कि राजी छई। बीरा भुली गुठ्यार उतरीक कांगला तैं उठौण ल्हैगे त वख लुक्यां राक्षस न वींकू हाथ पकड़ीक बोले "मैं वर्षू–वर्षू कु भुक्खू छौं। कख न आई तू मेरा मुख पर "फिर राक्षस न जोर सि गिगड़ाट करे आ हा हा हा अ हा हा हा! बीरा बीर नौनी छई, हाथ छुटौण की वींन बड़ि–बड़ि कोशिश करेन पर राक्षस का सामणी वींकी एक नि चले।

"अब खांदौं मैं तेरू कोंगलू मांस, तेरी सब हाड़की मुटकी मैं गन्ना जन चुसी द्यूंलो, हा हा हा"।

राक्षस कु गिगड़ाट थथराट सुणीक सब्बि भाई लाखड़ का गड़ोला जंगल मा छोड़की दौड़ी–दौड़ी आयेन। वो समझिगे छया कि बीरा भुली का पराण खतरा मा छन राक्षस न बीरा नौनी दुया हाथू पर उठैक अपडू गिच्चू खोले अर वींकी धौण गिच्चा पर धर्न बैठे, तबरेक पंचभैय्यों न राक्षस पर धड़ाधड़ कुल्हाड़ा चमकायेन नौनी वेका हाथू पर छुटि पड़े अर वो धड़ाम सि भ्वाँ मा ढलिगे। भ्वां मा पड़ीक वेन बोले, "पंचभैय्यों तुमुन यू अच्छू काम नि करे, तुमुन अपडु वायदा नि निभाये, मैं खड्डी सि भैर कख नि गयों, मैं तुमारी वायदा खिलाफी कू बदलू एक बार नि बार–बार ल्यौलूं।, अब मैं शरीर रूप मा जन्म नीं लेण्या मैं तमाम लोगू का दिमागू मा जन्म ल्यौलूं अर तुमारी बेटी बैण्यों तैं माँ का गर्भ मा हि खई द्योलों। जु गर्भ सि भैर अली वूं तैं ब्यौ–मंतर सि लीक सैसर तक छोड्ण्यां नीं, मैं वूंकू पीछा कर्दु रौलु। आज तुमुन एक बीरा बैण बचाये भोल कत्यौं बचैल्या। तब तुम मैं सणि मारी भि नि सकदा, देखि भि नि सकदा। यथगा बोलीक राक्षस का पराण छुटिगेन।

❐❐❐

माधु-धुमा भड़

माधु धुमा एक जान्यु–मान्यु भड़ छौ। वो बालिग भी नि ह्वे छौ कि वे का बीर बाबा कु अचानक स्वर्गवास ह्वेगे। कुछ समय तक बाबाजी की धरीं ढकीं सामगरि चल्दी रै। डेरा म लोण निमणन वळु छौ। कैका डैरा लोंण मागण वेकि ब्वे कनै जाओ किलै कि आज तक यनि चीज लेण लोग खुद वूंका डेरा औंदा छा। वींन अपणा लाडला माधु कु बोले ''बेटा घर पर लोंण निमड़न वळु छ अब त हमु सणि अलोणु ही खाणु पड़लु या नाक कु सिंगाणु खौला। लोण ल्योण्या तेरी बुबाजी त स्वर्ग चलिगिन अब क्या होलु।'' माधु सणि ब्वे की यीं बात सुणिक गुस्सा अै पड़े वेन चिल्लै क बौले "सिंगाणु हमारा बैरी दुश्मन खाला, ब्वे तू लोण की जगा बतों मैं अभी लोंण लीक औंदों"। ब्वे न माधु समझाए बेटा लोंण बहुत दूर मिल्दो वख जाणु खतरा से खाली नि छ तेरा बस कु वख जाणु नि छ। तू यखलि कनै जैलू। माधु न अनाड़ी भरि दिने मेरा बस कु सब कुछ छ तू लोण कू बाटु बतौ। जब माधु धादि पड़िगे त जिया ब्वे न अपणि दुधी की एक छराक एक पहाड़ या चट्टान पर मार त पहाड़ टुटिक खण्ड–खण्ड ह्वेगे। वींन बोले बेटा माधु अब तू यीं बाट देहरा की माऽल जा पर सुण अगाड़ि खतरा ही खतरा छन, सोची समझिक बाटु चलि।

माधुन बोले, "खतरा क्या–क्या छन। साफ–साफ बतैं दे," ब्वेन बोले, "बेटा खतरा जंगली जानवरों कु नि छ, वेसि त तू निपटि ल्येलु पर और कई खतरा छन। पैलि त टिरि पौछण सि पैलि भादू की मगरी कु भड़ छ। त्वे सणि देखलु त छोड़या निये, त्वेन माफी भी त नि मांगणि। अगनै चम्बा सि ह्यिुंल गाड तक एक भारी–भारी बडी नागीण रैंद, ज्वा अपणी फुंकार सि ही बड़ा–बड़ा जीव–जन्तुओं सणि अपणा गिच्चा पर खैंचि लेंदे। फिर अगाड़ी जिडली का सिज्जू अर बिज्जू नौ का द्वी भड़ छन। और अगाड़ी जैलु त गोरण ढुमका कु भड़ गोरण ढ़ोलक्या छ, जु भारि जान्यु–मान्यु अर वीर छ, यों खतरों सणि तू कनै पार करल्यु मेरा लाल।"

माधु धुमा भी आफु सणि कम नि समझि रै थौ। वेन सुरू सांस करे, लाद की खातिर अपणि भेरि–बाखरी सजाइन रास्ता की खातिर सातू अर अन्य सामान खाणक धरे। जिया ब्वेन लगड़ि–पतुंड़ि बणैक दिनिन। माधु न ब्वे सि आशीर्वाद लिने अर चल्दिने लोण लेण माऽल की खातिर। ब्वे की जिकुड़ी धक्क–धक्क कनि छै। चल्द–चल्द माधु टिरि पंहुचण वळु छौ, कि यतना म भादू की मगरी म वख का भड़ की नजर वे पर लगे, वेन बाले अरे यू भेरी बाखरों वळु कु छ जांणु। माधुन अकड़िक बोले, "तू पुछदारु कु होंवे, मैं माधु धुमा भड़ छौं"।

वे कु नौ भादू थौ अर एक छोटी सि जगह कु वो मालिक थौ वे ये वास्ता यीं जगह क लोग भादू की मगरी बोल्दा था। भादू न माधु की अक्कड़ देखिक वे पर सीधो हमला करे। माधुन जल्दी म अपणा कंड कू भारू भ्वां धरे अर भादू सि भिड़गे। कई घंटों तक द्वियों की बीच मल्ल युद्ध होये। कभी भादू निस पड़ों त कभी माधु अंत म माधु न भादू कु खुटु यतना जोर सि खैंचे कि भादू जमीन म पड़िगे फिर माधु न वो उठण नि दिनि। जोर सि भ्वां पड़न सि भादू बुरी तरह घायल ह्वेगे अर कुछ घंटों देर बाद वे की मृत्यु ह्वेगे।

माधु बड़ा उत्साह सि अगाड़ि बढ़ि रै थौ, चम्बा म वबारि बसैत बहुत कम थै। कुछ छान–झौपड़ि जरूर थै। माधु न सोचे रात कै छानि म जगा मिलि जालि किन्तु वख क्वी मनखी नजर नि आयी। दरअसल वे दिन नागीण और देस अैगि थै। वे यनु अंदेशा ल्हगे कि जनु वे कि ब्वे न बतायी थौ यख बड़ी नागीण रैंद। चम्बा सि नागणि तक यीं नागीण कु इलाकु थौ, यीं नागीण की लम्बाई करीब सात मील थै। यख एक पीपल कु डाळु थौ जैका ऐंच द्वी कागा बैठ्यां रैंदा था। मनखि अर जानवरों का यख दिखेण म कागा का ..... का .....का.....करन ल्हेगि जांदा था। कागा का .....का.....किलै करदा था? पता नि य त मुसाफिर सणि सावधान करदा था या नागीण का दगड़ा वो मिल्यां था बात जु भी हो पर कागों का का.....का..... करन पर नागीण समझियाल्दि छै कि क्वी शिकार अै गे। अर नागीण अपणा फण की फुंकार सि वे सणि अपणा गिच्चा मा खिंचिलेंदी थै।

कुछ लोग जौंन् नागीण का बारा म सुणि थै दूर भागी जांदा था। पर अनजान लोग नागीण का शिकार बणि जांदा छा पूरा इलाका का जीवधारी नागीण का आंतक सि परेशान छा। माधु का औण पर कागा बासण ल्हेगिन का.....का.....का.....! माधु भड़ सब कुछ समझिगे, पैलि वेन एक बाखरू अगाड़ि करे तै बाखरू जनि उड़िक नागीण का पेट पर चलिगे। अब माधु अगाड़ी होये अर वेन अपणी तलवार नागीण पर आक्रमण का खातिर तैयार करि दिने। नागीण न अपणी फुंकार सि माधु खैंचण चाहे पर असफल रै। फिर त माधु सावधान ह्वेगे। नागीण समणि आए त माधु न फूर्त्ति का दगड़ नागीण पर तलवार सि हमला करिक नागीण कु फण कलम करि दिने, अर तेजी से तलवार सि वार करदे नागीण का टुकड़ा–टुकड़ा होंदा रैन। पर एक चमत्कार यु ह्वे रै थौ कि नागीण का नया–नया फण भी अै रयां था। पर माधु भड़ बड़ी फूर्ति का साथ यों सणि काटदा गे सात मील लम्बी नागीण अर माधु अकेलु, पिछड़ी बिटि भेरा अर बाखरा वो लरै रै था। आखिर म माधु भड़ न नागीण कु अंत करि दिने। नागीण मारन म वे सणि पूरू दिन अर एक रात लगे। अब माधु बहुत थकगे साथ हि वेकु शरीर भी ल्वे का छीटों सि लाल ह्वेगे जहर कु वे पर ज्यादा असर त नि ह्वे पर वे सणि जनु नशा होण ल्हेगे। ये हल्का जहर उतारन क माधु कुछ दिन ह्यूंल नदी का एक बड़ा काकड़ा का रौ पर पाणी का बीच रये, तब वो स्वस्थ ह्वेगे। नागीण का नौ सि अब यख एक छौटु कस्बा नागणी बणगे अर यख आज भी एक भौत बडु उड्यार छ जु द्वि मंजिल कु छ यनु बतोंदिन कि नागीण ये उड्यार का भीतर आराम करदि थै ऐंच की मंजिल पर नागीण कु फण रैंदु छौ। उड्यार कु नौ नागीण कु उड्यार छ। यु यतना बडु छ कि 200 आदमी यख भित्तर बैठिक सभा करि सकदन। ये ओडार सि ह्यूंल नदी कु जु बाटु कभी नागीण कु रै होलु वे बाट पर अब भी क्वी वनस्पति नि जमी सकी। आज भी खेति–किसानी वळा लोग सेरों म काम करू सि पैलि नागीण कु नौ कु रोट जरूर काटदना,

नितर कई छोटा सांफ नजर औंदान।

नागीण मारन का बाद माधु भड़ लोण लेण की खातिर माऽल का रास्ता अगाड़ी बढे। जिजली का द्वी भड़ भाई सिज्जु अर बिज्जु बड़ा बेमान अर धूर्त था। ये इलाका म लोग वूं सि परेशान था। कैसि कुछ अन्न आदि पैंछु लेणु देणु हो त सुल्टा पाथा सि भरिक लेंदा था अर उल्टा पाथा भरि लौटादा था। क्वी कुछ नि बोलि सकदु थौ वरना बोल पर मारदा था। माधु अर वेका भेरा–बाखरों देखिक वूंन वे लुटण का खातिर हमला करे। वूंन सोचे माधु मारिक सब कुछ वूंकु ह्वे जालु। पर माधु पर जनि वूंन हमला करे, माधु न एक बैं काख निसाण अर हैंकु दैं काख निसाण यना दबाइन कि वो माछौं की तरौं भटकाण ल्हेगिन। माधु न थोड़ी ढ़ीला करिक छोड़िन त फिर वूंन हमला करे फिर त माधु न एक–एक करिक ठंडा करि दिने। वूंकि जनानी रोण ल्हेगिन हमारू क्या होलु वूंन माधू तै बोले, हम सौचदि छौ कि हमारा पति भारी वीर छन पर माधू तू त वूंकु भी गुरू निकल्ये। अब हम अनाथ छां हम सणि भी अपणा दगड़ा ल्हिजा हम अब तेरी छां। हमारू सब कुछ तैरू छ।

माधु अब अगाड़ी बढ़े जिजली बिटि सीधु गोरण का बाट देहरा कु बाटु पकडे। गैल म अब भेरा–बाखरों का अलावा सिज्जु अर बिज्जु की जनानी भी थै जु अब माधु की ह्वे रै थै।

गोरण ढुमका पौंछण पर माधु की नजर पैलि गोरिण भड़ का महल पर लगे गोरण ढोलक्या ये इलाका कु भौत बड़ो भड़ थौ। चौतरफा वे की हाम थै, खूब हट्टो–कट्टो जोधा। बाईस हाथ कु त वे कु नंग ही थौ वे देखिक सब डरदा था। पाड़ कोरि–कोरि क वेन एक छेंणु बणाई अर ये छेणा या दुल्ना का बाट वो भैर दिल्ली तक जांदु थौ। जबरि वो दिल्ली जांदु थौ एक लम्बी डोर कु एक छोड़ अपणा पंलग पर बांधदु थौ अर हैंकु छोड़ गैल ल्हिजादु थौ, अपणी बैरबानी सणि बतै देंदु थौ कि यदि क्वी खतरा हो त डोर हिलै द्ये मैं तुरंत अै जौलु एक तरह सि यू वेकु संकेत वळु टेलिफोन छौ।

जबारि माधु वेका डेरा पौंछि वेकी बैरबान घर पर अकेली थै। माधु देखिक व अचरज म पड़िगे कि येन यख औण की कनै हिम्मत

करे। वींन माधु क बोले अरे तू कू छै और यख किलै आए यखन जल्दी चली जा नितर तेरू काल गोरण औण वळु छ। माधु न उल्टु बोले काळ मेरू नि गोरण कु अैग्ये। मैं यखन तब तक जाण्या नि जब तक गोरण नि आलो, गोरण वबारि दिल्ली थौ जायुं। सामणी पर गोरण कु पलंग थौ लग्यूं माधु पंलग मति धंसिक बैठिगे। गोरण की घरवळि भी घबरै गे वींन डोर खैंचि दिने वींन बोले अब देख औण वळु छ तेरू काळ अब झड़दे तेरी टेंट। माधु की नजर डोरी पर ल्हेगे वेन डोरी खैंचिक देखे त डोर अगाड़ी–अगाड़ी बढ़ी थै और अगाड़ी वेन देखे कि डोर धरती–पहाड़ का भीतर छेणा की बाट अगाड़ी छ। समझदार माधु न जंगल बटे झट–पट लाखड़ा कट्ठा करिन अर लाखड़ा सारन म सिज्जु–बिज्जु की द्वी जनानी अगाड़ी आइन जु अब माधु की ह्वेगे छै। कुछ देर बाद वूंन पूरू छेणु लाखडों सि भरि दिने। माधु न झट–पट यों लाखड़ों पर आग लगै दिने। माधुन सोचे कि अब गोरण फुक्ये जालु गोरण की घरवळि भी र्‌वे–र्‌वे का चिल्ले रै थै। वेकु वापसी कु बाटु एक ही थौ अर वख माधु न आग लगालि थै। आग भितर ही भितर बिकराल बणिगे।

गोरण भौत बडु खतरा भांपगे, आज जरूर कुछ बडों संकट छ किलै कि वेकी खतरा की डौर छेणा का भितर जनि फुकेणि गोरण न खैंचे वा और लाखडों सि दबिक बुझगे अर गोरण का पास पौंछगे। गोरण न डोरि कु छोड़ फुक्यूं देखयाले, गोरण चोट्यायु लौटे पर लाखडों सि छेणु बंद थौ सारि बात समझगे अर लाखड़ा पिछडिक खैंचि–खैंचिक अपणु बाटु साफ करदि गे। पर अगाड़ि धुंआ और ल्हेगे अर फिर बाड़वाग्नि। गोरण भी हिम्मत हारण वळु नि छौ, वेन अपणा 22 हाथ का नंग सि जगदि आग, अंगार अर राखु वूंडु–फुंडु करिक कुछ माट डाले अर खतरा म खेळिक कै तरह सि बचिक घर पौंछिगे। पर वे कि सकल अधफुका लाखड़ा जनि छै। 22 हाथ कु नंग जळि क कुल 5 हाथ बच्चु थौ। बाल सब फुक्येगि छा अर शरीर भी जगा–जगा जळ्युं छौ। पर वेकि हिम्मत देखा औंदि सैत वेन सीधो माधु ललकारे, "कुछ माचु वो बेमान आग लगांदारू सामणि ओ/वेन शेर जनि गर्जना करे"। पर यख माधु भी स्याळ नि छौं

वेन भी गर्जना करे अरे मैं छौं माधु धुमा भड़.....। गोरण न बोले, "अरे यीं दुनिया म आज तक मैं सि बडु भड़ क्वी नि होई, तू सामणि औ, मैं तेरी ज्यान लेंदों। हमला कैन अर कब कैपर करे कुछ पता नी पर वूंकि यनि गुस्तम–गुस्ता होय कि ये इलाका मा भ्यूंचळू ऐगे अर यनु धुलु उड़े जनु कुरेडु ल्हगि हो। कतनै दिन तक वूं कू मल्ल युद्ध होए कभी माध ु भ्वां त कभी गोरण। गोरण कि घरवळि न गोरण समझौण की कोशिश करे कि तुम पैलि ही आग सि घायल छां त्ये छिता का मुख नि ल्हगा। यू हमारू काळ छ, पर गोरण मानण वळु नि थौ आखिरम गोरण चित ह्वेक पड़िगे। सबुन जाणे कि अब गोरण मरिगे। माधु लड़ाई सि थकिक थोड़ा आराम थौ करनु। यतना म गोरण किबलाण ल्हगे..... वे का मुख सि निकळे हे वीर माधु–धु.....मा, तू मेरू गुरू निकल्ये, मैं तेरि बहादुरी की इज्जत करदौं मैं यीं दुनिया जै र्‌यों अर मरदि वक्त अयड़ा गुरू भड़ माधु का दगड़ा भेंट्‌णु मेरी अन्तिम इच्छा छ। माधु सणि गोरण पर दया ऐगे अर वो वे पर भेट्‌येण ल्हगे, यतना म गोरण न अपणा पांच हाथ का बच्चा नंग सि माधु का पेट पर चीरा मारि दिने, माधु कु पेट फटे अर गौरण का पराण पंखेरू भी उड़िन पर माधु न चट पट अपणी धोती सि पेट बांधिक लपेटी दिने आंदड़ा–पेंदड़ा भैर औण सि बचगिन गोरण की घरवळि विलाप पड़िगे.....हे माधु मैं अकेला नि छोड़ मैं तै भी साथ ल्हिजा, सोनु चांदी घर–बार सब तेरू छ।"

माधु पैलि माऽल गये वख बिटि खुशी–खुशी म लोण, कपड़ा, गुड़ अर न जाण क्या–क्या वेन जिया ब्वे का वास्ता रखे अर भेरा–बाखरों पर लदिक, तीन जनानियों, सोना–चांदी लद्‌दू–गद्‌दू लीक घर पौंछे, तिन्या जनानियों न वीर भड़ की वीर ब्वे का खुट्टों म सेवा लगाए। ब्वे तैं चिन्ता छै, कई दिनों सि मेरू माधु भुक्को–प्यासो होलु। वींन भात–दाळ बणाए अर माधु खाणा की खातिर न्यूते खाणु बिल्कुल तैयार छौ खाण सि मेरू पेट फुट्‌युं छ, बस देखद ही देखद वेकु सैरू पेट भैर अैग्ये अर वो ईश्वर तैं प्यारू ह्वेगे, जनानियो न सारा हाल चाल जिया ब्वे तै बताइन दुखी ह्वेक जिया ब्वेन श्राप दिने जा

❑❑❑

फुर फतैं मेरि कुंडळि कथैं

एक छौ मूसो अर एक छै मूसी। मूसो छौ बड़ो अज्ञाकारी। सब धाणी धन्दा मूसो ही करदो छौ। पर पछिन्डो पड़्यूं छौ मूसी पर। वो छै भारी आलसी। एक दिन मूसा न मूसी मा बोले चल मेरी मूसी पुगंड़ा बाणा को जौंला। झटपट सब धाणी द्वी झणा करला। अर तब सर्‌या रूड़ि चैन से खौंला। पर देखा द्यौं यू बकिबात। मूसी सूणि की हैड़ नी फरकी। अर मुरतण्या बाच मा मूसा से बोली–

स्वी बे मुसा स्वी। स्वी बे मुसा स्वी,
टंगड़ि टुटी द्वी जंगड़ि टुटी द्वी।
जारे मुसा त्वी। जा रे मुसा त्वी।

खैर यो त ह्वेगे। पुंगडा बाणा का बाद मूसा न मूसी तै धै लगाई कि–चल मेरी मूसी अब सट्‌टी बूती औंला। झटपट सब धाणी द्वी झणा करला अर तब सर्‌या रूड़ि चैन से खौंला पर मूसी त मूसी छ, वीन हैड़ि नी फरकी अर घुन्जा बोटिकी मूसा से बोली–

स्वी बे मूसा स्वी। जंगाडि टुटी द्वी।
जारे मुसा त्वी, जा रे मुसा त्वी।

खैर भौत दिनों बाद जब सट्‌टी बुत्ये गैन, तब मूसा न मूसी को मन टटोले कि– चल मेरी मूसी अब सट्‌टी गोड़ि औंला झटपट सब धाणि द्वी झणा करला अर तब सर्‌या रूड़ि चैन से खौंला। पर बिजोग पड़्यूं छौ मूसी पर। वीन खुट्‌टा लम्पसार कैरिक जवाब दे कि

स्वी बे मुसा स्वी। जंगड़ि टुटी द्वी
जा बे मुसा त्वी, जा बे मुसा त्वी।

अगनै यो होये कि सट्‌टी गोड़ना का बाद मूसा न फिर पूछे कि– चल मेरी मूसी अब सट्‌टी काटि औंला। अर साल भर चैन से खौंला पर मूसी राणी जरा भि नी ठसकी फिर वी बात कि

स्वी वे मुसा स्वी। जा बे मुसा त्वी,

कटणा अर मंडणा का बाद वो मूसो चौंळ भोरि की द्वी थाली

लायो। मूसी पड़ी लम्पसार। मूसा न आग जगै की भात पकायो। मूसी न देखि कि अहा भात पकिगे। झट्ट उठे मूसी। वी थैं रकर्याट ह्वेगे। सोचण लगे कि क्या जि करो। कख जि जौं। अलगासी मूसी तै फफरायाट ह्वेगे वो नाचण लगे कि –

फर फतैं मेरि कुंडळि कथैं।
क्वी भि म्यारो भात नी खैं।

बस अपणा रकर्याट अर फफरायाट मा निभर्गी मूसी चरकैकि भात का डिगचा मा गिरिगे। भात अर डिगचो द्वी का द्वी गरम छाया। हूण क्य छौ तब। तुम्ही लोग सोचा। लालची अर अलगस्या मनख्यूं को अंत इन्नी त हूंद। मूसा न मूसी पड्यूं भात की डिगची चुलै दे अर दूसरी मूसी की खोज मा पड़गे। क्य कन छौ तब?

सौजन्य से :–
उर्मिल कुमार थपलियाल
लखनऊ

❐❐❐

सूनी गरूड़

भौत पुराणि बात छ, पृथ्वी आग को जलदों गोला छौ। एक दिन विष्णु भगवान की नाभि बटे एक कमल को फूल निकले। कमल का फूल बटे ब्रह्मा जी को जनम ह्वे, वूंमा एक किताब छयी, ब्रहमा जी यीं पोथी (किताब) तै पढ़दा छा, यांका अलावा टाइम–पास कर्नो हौरि कुछ भि नि छौ। पोथी (चंडी) तै पढ़दा–पढ़दा वो परेशान ह्वेगिन, ऊबी कै वो कमल का फूल बटे निकलि के डन्ठल मा हिटण बैठि ठगेन। कतगै दिन चलणा बाद भि वो जलड़ों तक नि पोंछी साका। आखिर मा फेर चण्डी पढ़ण बैठिगिन, तब जाकै कमल का जलड़ा तक पौछ सकिने। तब वूं पता चले कि कमल को डण्ठल विष्णु की नाभि से जुड़ेयूं छ। वख ब्रह्मा जी की विष्णु जी से भेंट ह्वे। वूंन पूछे तुम तौळ किलै अयां तुम तैं चण्डी पढ़ण कु दियीं छ, अरे तुम वीं तै पढ़दा रावा अर तब तक पढ़दा रावा जब तक वो शिवजी का कंदूड़ तक नि सुणेंदी।

येका बाद ब्रह्मा जी चण्डी पढ़ण लगिन तब शिवजी प्रकट ह्वेन। तिन्या मिलीं, सौ सलाह करे– या पृथ्वी त आगो गोला छ, न क्वी जीव–जन्तु न क्वी चाँद–तारा अब येको विकास कन मा करे जावा स्वचण लगिन। फेर तिन्योन् अपणो शरीर मले–यांसे एक गारूड़ी बणे, फिर वीं पर प्राण डाले येका बाद विष्णु की आँख बटें एक आँसू निकले– यां से गारूड़ी गर्भवती ह्वेगे। गरूड़ी आसमान मा उड़ण लगे एक दिन गरूड़ी तैं पीड़ा ह्वे अर वा जोर से चिल्लाण लगे तब विष्णु जी न बह्मा जी तै बुले– सूनी गरूड़ी को अण्डा हूण वळों छ, तुम जावा वींन तुम्हारा पंख मा अण्डा देण। अण्डा हाथ मा पखड्यां अण्डा का द्वी भाग हूणिन एक भाग से सूरज, चांद, तारा बणणिन अर दूसरा भाग से पृथ्वी बणण। जो अण्डा का बीच को तरल भाग होलो वे से सोना–चाँदी खनिज–पदार्थ बणणिन, अण्डा का भित्र जो केशर छ, वेको पेड़ू बणण। वे पेड़ की 12 शाखा हूणि ान। पेड़ पर 360 पत्तियों लगणिन। 12 शखाओं का 12 महिना अर

360 पत्तियों का 360 दिन बणणिन। फेर वूंकी 34 शखाओं से हफ्ता अर वार बणणिन।

इनो सूणी कै ब्रह्मा जी न बोले– फेर त मिन सभी गन्दो ह्वे जाण पर विष्णु जी न बोले कि तुमारो शरीर गन्दो होला त वैंतै मैं ठिक करलो पर तुम तैं मथि जाणी प्वडण। गरूड़ी न अण्डा दे, जनो ब्वल्यूँ छौ उनो हि ह्वे। आपस मा फेर सलाह ह्वे– आदिम कनक्वे बणये जावा। पैली सोना को बणै फेर चाँदी को अर तब पीतल को। कैमा भि आवाज नि आयी। सब्बि सोच मा पड़ी गेन तब माटो अर राख को मनखि बणै वेमा आवाज ऐगे, लेकिन वो हिट नि सकदो छयो प्वडयूं रा त प्वडयूं रैन्दो छौ अर खड़ो रा त, खड़ो रैंदो छौ। करे जावा त क्या। एक दिन भगवान जंगल की तिरफा जाण लगिन त वेन बोले मैं भी आणू छौं तुम दगड़। भगवान न वेकी विनती सूणी अर वेतैं भि दगड़ लहीगेन। जांदा–जांदा वो भौत दूर चलीगेन–वूंन आदिम तैं धारा मा खड़ो करिदे अर अपणा–आप अगनै निकली गेन। तबि वख मा पाँच परियां ऐन, वूंन वे आदिम तैं देखी अर वैतैं काटी कै वेका बांठा लगाण लगिन। तभी भगवान लौटिन त वूंन देखी कि परियां वेका बांठा लगाणि छन। भगवानों तैं गुस्सा ऐगि भगवान जी परियों से बोले हमारा आदिम तै लौटावा नथर हमन तुम जान से मार दिणवाँ। परियां डैर गिन, वूंन बोले हम तुमरा आदिम तैं दे दयूंला पर हमारि एक शर्त छ–अद्दा तुमारो अर अद्दा हमारू। भगवान असमंजस मा पड़िगेन पर वूंन सोचे कि अदिम वापिस मिल जावा त शर्त मणण मा क्वी हर्जा नी छ। परियों न बोले तुम जावा हम थ्वड़ा देर आदिम तैं ल्हेकि औंला। परियां वे कटयां मॉसा तैं पोथण लगीन जब आदिम बणिक तैय्यार ह्वे त वो हिट सकदो छौं अर बचे सकदो छौं। भगवान यो दखिक हैरान ह्वे त वो हिट सकदो अर बचे सकदो छौं। भगवान यो देखिक हैरान ह्वेगिन यो परियां नि छयी या डायन छै (डायन हमेशा आदिम तै मिली कै खांदिन)।

आदिमो ब्यो करेंगे– वेका चार नौना ह्वेन। जब वो बड़ा ह्वेगिन त एक वो घूमणा खुणै गेन त रस्ता मा वूं तै तीस लगे वो कुआं का

समणि गेन जख मा एक गौड़ी म्वरीं छै। बड़ा भै न गाय हटाण से मना कैरि दे फिर दूसरा अर तीसरा न भि। तब चौथा तै गुस्सा ऐगे वैन गाय हटें दे अर पाणी पेण लगे। अर तू कुआं को पाणी नि प्ये अब तू हमतें भिड़े ना। हम त्वेतैं अलग पाणि द्यूंला, जब खाणें बारी आये त वे तैं अलग से दिये गें धीरे–धीरे वेतैं अछूत समझण लगीन्। एक दिन चौथन बोले– तुम मितैं अफ्फु दगड़ कब मिलेला। अरे मिले द्यूंला– अबि तू अछूत छै। वो बाना पर बाना बणाण लगीन् पैलि बोले– पाँचो दिन मिलौंला, फिर दसौं दिन, फिर बाना बणाणा रैन कि त्वे तैं दस कर्म कर्न पोड़ला। बाना पर बाना आखिर कब तक चलला आखिर मेरि क्या गलती क्या छ। मिन गाय हटाकै तुम खुण ौ पाणी पीण लैक बणै।

देख भाई– हम येमा कुछ नि कैरि सकदा अब हम त्वे तैं चौथा युग मा ही अफ्फु दगड़ मिलै सकदां –कलयुग मा।

सौजन्य से : सुरेन्द्र पुण्डीर, घोड़ा खौरी
मेहरवान सिह रावत

❐❐❐

गैथे डाळी

दूर डाडां का गौमा एक मवासो इनो छयो जैमा तीन माबत छया, सोबनू रूकमा अर तौंको नौनू सुन्दरू सुन्दरू जब सिरफ पाँच सालौ छयो उबारे ही वेकी मां को स्वर्गवास ह्वेगे छौ, अब दुया बुबा अर नौनो बिल्कुल अकेला ह्वेगे छा, सोबनून सोचे इनमा कुटमदरि की टप्पा ठुमिरि चल्नी मुश्किल छ यान मी सणि नै ब्यौ कर्न ही पाड्लो। वैन दुसरो ब्यौ करिदे। कुछ दिन वो नै ब्योली दगड़ी खुशीम रै। धीरे–धीरे जब सुन्दरू बड़ो ह्वेगे त सुन्दरू की मौस्याण ब्वै वे तैं देखी जलण बैठिगे, वींन सोचे भोल म्यारा अपणा नौना बाळा होला त यो माचद कनु करी निरैणो करै जौ। वींन सुन्दरू तैं मरणौ तै जाळ रचणू शुरू कर दे। सबसे पैली वींन अपणा आदिम तैं अपणा प्रेम–स्वांग मा फँसे अर अपणो षड़यन्त्र बतै। पैली त सोबनू यो सड़यन्त्र सूणी हकदक रैगे मगर वो रूकमा का प्रेम मा इतगा डुब्यूं छयो कि ये अनर्थ खुणि तयार ह्वेगे। अब दुया वे तैं मरणै जुग्ति स्वचण बैठिने। वो दुया झणा रातभर यनी योजना बणाणा रैन। सुबेर द्विया सिनक्वली उठिने, रूकमान द्वियो बाप–ब्यटा तैं च्या पिलै अर सोबनू का गैथौ थैला दे अर बोली, "तै निरबै छ्वारा तैं कूणै बाड़ी पुंगड़ ल्ही जावा, अर वे पुंगड़ा पल्या किनारा जो खुमदिर छ तैं मादा तै भकम वख धौळि दियां जो फुटगुद्या की छट्टी लगि जाव, इबरि फजल लेकी वख क्वी नि होलू"।

सोबनून हैळ कान्धि मा धरे, बीजौ थैला सुन्दरू तैं पकड़ाये अर अफु बल्द हकाण लगे। अजकाल सबि गैथ बुतणा छया। तैल्या–मैल्या पुंगड़ बल्दु को खाँखरू को खमख्याट सुणेणू छयो। डांडैं कुमेड़ी साड़यूं मा सरकणी छै। बरखा बि छिटाणी छै। सोबनून कूणै बाड़ी मा बल्द जोतिने अर तिरवाळ बटि बाण बैठिने सुन्दरू पल्या कूणा पर बैठि। सोबनू का बल्द हौलौ फुकान छया, घड़ी मा तौन अद्दा रवांडी रड़कै दे। तबरि सोबनू तै सुन्दरू को ख्याल ऐ, वैंन देखी सुन्दरू पुगड़ा कूड़ा मा कुछ घैटणू छ, बुबान वेतैं धै लगैं, "सुन्दरू

जरा ढिस्वाळ धरयूं तै बसुला तैं दे ये हाळौ निमौ निखुलिगे, अच्छु बुबाजी औंदौ छौ", "अरे पर तु कर्नू क्या छै तैं कूणा पर", सोबनू का विचार छयो पैली पुगडू बूती देदों तबि बजौलू सुन्दरू की संगरांद। सोबनून फिर बसुलू मंगै पर सुन्दरू पुगड़ा किनरा पर छींजा घैटण ू छयो वेका बुवान खिजें की बोली, "हे अणब्वल्या निरबै मौ करा तु क्या जिमदरो कर्नू छयी"। वैन जवाब दे, "अरे बुबाजी इनै त आवा पैली"। वेको बुवा पुगंड़ा कूणा पर गै, हा बोल क्या बात छ? "यख द्याखा बुबाजी यख त पैंली गैथै डाळी जमीं छ अर क्या झुपझुपी बणी छ, यीं पर त पट्ट एक अज्वाल गैथ लगला"। बवान बोली, "अरे लोळा तैं एक डाळी को क्या कर्न? द्यखणू नि मि सड़या पुगड़ा बुतणू छौ गैथ। अरे यख त हजारों डाळा ह्वला अर द्वी दूण गैथ कखि निजांदा अर तु उबरि बटे छै तैं डाळी का चरयां तरफ घेरबाड़ कर्नू क्या मिल्न त्वे स्यान? वेन कै दाना बुढ़या की तरौं अपणा बुवातैं समझै, "बुबाजी जौं गैथू तुम बुतणा छां क्या भरोसू सि जमदा छिन कि ना, बुतणा बात बरखा होंदी छ किना यान जो डाळी पैली जमीं छ वींकी देखभाल किलै नि करै जौ, किलै वीतैं नि सैंते पळें जौ, जो सितगा हुणत्याळि दिखेणी छ"। वेकी यूं छुयूं सूणी सोबनू हकदक रैगे वेकी आँखी खुलिगे वैंन अब चितैकि वो आज कनु अनर्थ करणै स्वचणू छयो वेतैं भारी अपराध बोध होणू छयो। वैन अद्दा पुगडु बैकी बल्द खोलि दिने। सुन्दरून बोली, "बुबाजी बल्द किलै खोलिनी सि गैथ नि बुतणै", सोबनू न सुन्दरू खुळली मा उठै अर बोलि ब्याटा मी खुणि एक डाळी भौत छ। मी तैं हौरि डाळी नि चैणी छन एक हुणत्याळि डाली हजारौ बुसिळी डाल्यूं से बढ़कर छः, आज यीं गैथे डाळी देखी मेरी आँखी खुळिगे"।

सौजन्य से :– माला थपलियाल
ग्राम ईड़ा –पंचुर

❐❐❐